चित्रलेखा

जनवरी - जून 2024

श्री चित्रा तिरुनाल आयर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार के अधीन एक राष्ट्रीय महत्व का संस्थान

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान,
त्रिवेंद्रम की अर्द्ध वार्षिक गृह पत्रिका

चित्रलेखा

मुख्य संरक्षक
प्रोफ.डॉ. संजय बिहारी
श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान
निदेशक

संपादक
डॉ.देबाशिष गुप्ता
प्राध्यापक, आधान चिकित्सा विभाग
श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान

संपादकीय सलाहकार समिति
डॉ. बी. सन्तोष कुमार
कुलसचिव
श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान

फोटोग्राफी एवं डिसाईन
श्री.लिजी कुमार जी.
वैज्ञानिक अधिकारी,मेडिकल इल्लस्ट्रेषन प्रभाग
श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान

रूपांकन
सुश्री नीतू के एम,
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक
श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान- परिचय

संस्थान का प्रारंभ सन् 1973 में हुआ जब त्रावणकोर के शाही घराने ने केरल की जनता और केरल सरकार को एक बहुमंजली इमारत भेंट की। सन् 1976 में योजना आयोग के तत्कालीन उपाध्यक्ष श्री .पी.एन हस्कर ने श्री चित्रा चिकित्सा केंद्र का उद्घाटन किया और इसके साथ ही मरीजों के लिए विविध सेवाओं और अंतरंग चिकित्सा का आरंभ हुआ। उसके शीघ्र बाद साटेलमोन्ढ महल, पूजप्पुरा के अंदर जैवचिकित्सीय प्रौद्योगिकी स्कंध का आरंभ हुआ जो कि अस्पताल स्कंध से 8 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यह इमारत भी शाही घराने द्वारा भेंट दी गई थी।

भारत सरकार ने आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी विज्ञान को एकल बृहत संस्थान में विलय करने की अवधारणाओं को अत्यंत महत्वपूर्ण माना और सन् 1980 में एक संसदीय अधिनियम के द्वारा इस संस्थान को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अधीन राष्ट्रीय महत्व का संस्थान घोषित करके इसका नामकरण "श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान,त्रिवेंद्रम" किया।

15 जून 1992 को भारत सरकार के तत्कालीन वित्त मंत्री माननीय डॉ. मनमोहन सिंह ने संस्थान के तीसरे आयाम अच्युत मेनन सेंटर फॉर हेल्थ साईंस स्टडीस (ए.एम.एस.सी.एच.एस.एस) की आधार शिला रखी। उसके बाद 30 जनवरी, 2000 को तत्कालीन विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं मानव संसाधन विकास मंत्री माननीय श्री.मुरली मनोहर जोशी ने अच्युत मेनन केन्द्र को राष्ट्र के लिए समर्पित किया।

निदेशक की कलम से

भारत देश में बहुत भाषाएं बोली जाती है परंतु सबसे अधिक बोली जानेवाली भाषा हिन्दी है। हिन्दी भाषा का अपना ही एक महत्व है जिसके कारण यह लोगों के हृदय में एक महत्वपूर्ण स्थान लिए हुए है। अत्यंत खुशी की बात है कि हमारे संस्थान की हिन्दी गृह पत्रिका चित्रलेखा 2024 का प्रथम खंड प्रकाशित हो रहा है। इस पत्रिका श्री चित्रा परिवार के सदस्यों के लेखों से संपन्न हैं, जिसमें कविता, यात्रा वृत्त, लेख, रिपोर्टें, राजभाषा की गतिविधियां आदि शामिल हैं। इस प्रकार हमारे संस्थान का हिन्दी पत्रिका अधिकारियों,कर्मचारियों,छात्र –छात्रों के लिए एक अभिव्यक्ति का माध्यम भी है।

चित्रलेखा 2024 का प्रथम खंड के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। इस अवसर पर चित्रलेखा के सभी योगदानकर्ताओं और प्रकाशन के लिए कार्य कर रहे सभी को बधाइयाँ देता हूं।

प्रो. (डॉ). संजय बिहारी
निदेशक

संकायाध्यक्ष की कलम से

एससीटीआईएमएसटी की हिंदी पत्रिका चित्रलेखा, संस्थान के अंदर ज्ञान, अंतर्दृष्टि और प्रगति को साझा करने के लिए एक जीवंत मंच है। यह एससीटीआईएमएसटी द्वारा किए जा रहे चल रहे अनुसंधान, नवीन प्रौद्योगिकियों और स्वास्थ्य देखभाल पहलों के बारे में बहुमूल्य जानकारी का प्रसार करता है। संस्थान के अंदर महत्वपूर्ण उपलब्धियों और विकास पर प्रकाश डालकर, पत्रिका स्वास्थ्य पेशेवरों, शोधकर्ताओं और नीति निर्माताओं के बीच सहयोग को प्रेरित करना चाहती है।

चित्रलेखा के प्रत्येक अंक में विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों द्वारा लिखे गए लेख शामिल होते हैं, जिनमें जैव चिकित्सा इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी, चिकित्सा उपकरण विकास, सार्वजनिक स्वास्थ्य, नैदानिक अभ्यास और रोगी देखभाल जैसे विषय शामिल होते हैं। मैं अपने पाठकों को उत्सुकता और उत्साह के साथ प्रत्येक संस्करण का अन्वेषण करने के लिए आमंत्रित करता हूं क्योंकि हम एक स्वस्थ भविष्य की ओर प्रयास कर रहे हैं। मैं इस अवसर पर उन लोगों की भी सराहना और बधाई देना चाहता हूँ जिन्होंने पर्दे के पीछे कड़ी मेहनत की और इस अंक को प्रकाशित किया।

डॉ रॉय जोसफ
संकायाध्यक्ष
शैक्षणिक कार्य प्रभाग

प्रमुख, बी.एम.टी स्कंध की मंगल संदेश

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि चित्रलेखा का अगला अंक प्रकाशन के लिए तैयार है। यह गृह-पत्रिका हमारे राष्ट्रभाषा हिन्दी में, अपने कलात्मक एवं लेखन कौशल को व्यक्त करने के लिए चित्रा परिवार के सदस्यों को एक अवसर प्रदान करती है। यह कोई आसान काम नहीं है, बल्कि संयुक्त प्रयासों का परिणाम है मैं इस प्रयास की सफलता की कामना करता हूँ।

मैं इस अवसर पर चित्रलेखा के सभी योगदानकर्ताओं एवं संपादकों को बधाई देता हूँ।

डॉ. हरिकृष्ण वर्मा पी आर
प्रमुख, जैवचिकित्सकीय प्रौद्योगिकी स्कंध

उप निदेशक की कलम से

यह ख़ुशी की बात है कि हमारे संस्थान के हिन्दी गृह पत्रिका 'चित्रलेखा' जनवरी –जून 2024 का पहला खंड प्रकाशित होने जा रहा है। 'चित्रलेखा' संस्थान के डॉक्टर, अभियंता, वैज्ञानिक, अधिकारी, कर्मचारियों और छात्रों के विचार एवं प्रतिभा को हिन्दी में दर्शाने का माध्यम है। इसे संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ावा देने की दूसरी सीढ़ी मानना चाहिए। भारत सरकार के राजभाषा नीति के अनुसार हिन्दी भाषा को बढावा देने वाले इस कदम की सफलता केलिए पूरे संस्थान का योगदान अनिवार्य है। मैं आशा करता हूँ कि यह 'चित्रलेखा' पत्रिका संस्थान में प्रचलित हो। इसके पीछे काम करने वाले सभी लोगों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

डॉ मणिकंडन एस
उप निदेशक

कुलसचिव की कलम से

हमारी हिन्दी पत्रिका चित्रलेखा ने पिछले कुछ वर्षों में अपना अलग व्यक्तित्व विकसित किया है। कई वर्षों तक पत्रिका के साथ काम करने से यह मेरा हिस्सा बन गया है। यह गर्व के साथ संस्थान, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, संस्थान में होने वाली घटनाओं के बारे में बात करता है। जैसा कि मार्टिन लूथर ने एक बार कहा था, यदि आप दुनिया को बदलना चाहते हैं, तो अपनी कलम उठाए और लिखें। इसलिए इस अनुभव का हिस्सा बनें और भविष्य के संस्करणों के लिए योगदान करें।

मुझे पूरी उम्मीद है कि आप इसका आनंद लेंगे और इसकी सराहना करेंगे। पढ़ने में आनंद लें...

डॉ सन्तोष कुमार बी
कुलसचिव एवं संयोजक, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

संपादक की कलम से

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान के हिन्दी गृह पत्रिका “चित्रलेखा” का नया संस्करण प्रकाशित होने जा रहा है। चित्रलेखा" का यह नया संस्करण आपको समर्पित करते हुए मुझे बेहदख़ुशी हो रही हैं। यह पत्रिका हमारे संस्थान के डॉक्टर, अभियंता, वैज्ञानिक, अधिकारी, कर्मचारियों और छात्रों ने अपने विचार एवं प्रतिभा को हिन्दी में दर्शाने का प्रयास किया है।

हमारी संस्थान हिन्दी राजभाषा को बढ़ावा देने के लिए यह हिन्दी पत्रिका हर साल प्रकाशित करती हैं। संस्थान ने मुझे इस पत्रिका का संपादन का दायित्व सौंप कर गौरवान्वित किया है। हमने पुरी कोशिश की है कि यह पत्रिका उच्च कोटि स्तर का हो, जिसके लिए हमने इस संस्करण में आपके अनुभवों, हमारे संस्थान की उपलब्धियों और आपके भावनाओं को समाहित किया हैं।

मैं संस्थान के निदेशक महोदय,डॉ. संजय बिहारी का व्यक्तिगत आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका को उच्च कोटि का स्थान दिलाने के लिए हमेशा प्रोत्साहित किया हैं। इनके आलावा, मैं सभी लेखकों का भी व्यक्तिगत आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका केलिए अपना अमूल्य योगदान दिया है। मुझे आशा है कि इस में प्रकाशित कृतियों से पाठकों को उचित मार्ग दर्शन एवं जानकारी प्राप्त होगी तथा दैनिक सरकारी कार्यों में हिन्दी के प्रयोग में वृद्धि होगी।

मैं उम्मीद करता हूँ कि आप सब इसी तरह इस यात्रा में हमारे सहयोग करते रहेंगे और आप सबको यह संस्करण बेहद पसंद आयेगा।

जय हिन्द !

डॉ. देबाशिष गुप्ता
प्रोफेसर
रक्त आदान चिकित्सा विभाग

विषय सूची

1. यात्रा विवरण
2. कविता - नन्हीं किरण कुछ कह गई...
3. ए जी चित्रा ट्यूबरकुलोसिस डायग्नोस्टिक किट का राष्ट्रीय लॉन्च का रिपोर्ट
4. लेख - बायोलुमिनसेंस का जादू: प्रकृति की प्रकाशमान घटना"
5. कविता – मेरी मां
6. अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस समारोह 2024
7. विश्व नींद दिवस 2024
8. कविता – धरती
9. स्मृतिवनोल्सव 2024
10. प्रयोगशाला पशुओं के उचित एनेस्थीसिया, एनाल्जेसिया और इच्छामृत्यु द्वारा पशु प्रयोग का शोधन" पर एक दिवसीय कार्यशाला
11. सचिव, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेन्द्रम का दौरा रिपोर्ट
12. लेख - भारत में पहले हिंदी-आधारित विज्ञान और प्रौद्योगिकी संगोष्ठी का अनुभव
13. कविता - मैं मर गयी ..... लेकिन अगर मैं ज़िंदा रहे तो
14. स्वच्छता पखवाड़ा अभियान 2024
15. राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह 2024
16. अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस समारोह 2024
17. लेख - रामानुजन स्मारक
18. लेख - केरल जैव विविधता संग्रहालय
19. अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2024
20. विश्व सामाजिक कार्य दिवस 2024
21. हरित प्रोटोकॉल की ओर एक व्यापक कदम
22. दीक्षांत समारोह 2024
23. महाधमनी सर्जरी के प्रवेश द्वार खोलना: नर्सिंग उत्कृष्टता को सशक्त बनाना" विषय पर एक दिवसीय सम्मेलन
24. राजभाषा की गतिविधियां
26. मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

यात्रा विवरण

सुल्तानपुर राष्ट्रीय उद्यान (हरियाणा), वेम्बनाड कोल वेटलैंड और अष्टमुडी झील (केरल) रामसर स्थलों के झरोखों से: जीवन अस्तित्व और जैव विविधता के लिए आद्रभूमियों का महत्त्व

सदियों से प्रकृति ने पृथ्वी पर व्यापक जल और प्राकृतिक संसाधनों द्वारा बनस्पति एवं समस्त जीव-जंतुओं को जीवनदान दिया है, परन्तु वर्तमान काल में इन संसाधनों के तेजी से विलुप्तीकरण के कारण विश्व एक विषम कगार पर आ खड़ा है। इस समस्या को समझने और इसका समाधान जानने के लिए हम आद्रभूमि के बारे में जानने का प्रयास करेंगे। तो चलिए, पहले हम आपको सुल्तानपुर राष्ट्रीय उद्यान ले चलते है जो हरियाणा राज्य के गुरुग्राम-झज्जर राजमार्ग पर सुल्तानपुर गाँव में एक रामसर स्थल है। दिल्ली से 50 किमी दूर स्थित इस स्थल को पहले सुल्तानपुर पक्षी अभयारण्य के नाम से जाना जाता था। वर्ष २०२१ में इसे भारत के एक रामसर स्थल की मान्यता मिली थी। लगभग 142.52 हेक्टेयर में फैला हुआ यह राष्ट्रीय उद्यान निवासी और प्रवासी पक्षियों के लिए स्वर्ग स्वरूप आर्द्रभूमि है। प्रवासी पक्षी प्रजातियाँ भोजन की तलाश में और सर्दी बिताने के लिए यहाँ प्रतिवर्ष आते हैं। अभयारण्य में जांघिल (पेंटड स्टोर्क/सारस), रोज़ी पेलिकन. साइबेरियाई क्रेन,ग्रेटर फ्लेमिंगो,रफ, काली पंखो वाली स्टिल्ट,कॉमन टील,कॉमन ग्रीनशैंक,नॉर्दर्न पिंटेल,पीली वैगटेल,श्वेत वैगटेल,नॉर्दर्न शॉवेलर जैसे प्रवासी पक्षियों को देखा जा सकता है।

सुल्तानपुर झील में प्रवासी पक्षियों का शीत ऋतू में आगमन का चित्रण

सर्वप्रथम हम समझेंगे की वेटलैंड अर्थात आद्रभूमि क्या है। आर्द्रभूमि कन्वेंशन (अनुच्छेद 1) में आर्द्रभूमि को परिभाषित किया गया है की धरती पर वह सब सभी स्थान जो दलदल,फेन (नीची दलदल),पीटलैंड या पानी के क्षेत्र हैं,चाहे प्राकृतिक या कृत्रिम,स्थायी या अस्थायी,पानी स्थिर या बहने वाले,ताजा,खारा या नमकीन,जिसमें समुद्री पानी के कम गहरे क्षेत्र भी शामिल होते हैं।

आर्द्रभूमियों को मुख्यतय तीन श्रेणियों में बांटा गया है: समुंद्री और तटीय आर्द्रभूमि,अंतर्देशीय आर्द्रभूमि और मानव निर्मित आर्द्रभूमि। समुंद्री/तटीय आर्द्रभूमियाँ में वनस्पति रहित ज्वारीय फ्लैट,खारीय दलदल,मूंगा चट्टानें,मैंग्रोव और समुद्री घास के मैदान शामिल हैं। इस श्रेणी में खारीय दलदल का वैश्विक क्षेत्र सबसे बड़ा है। दूसरी श्रेणी अंतर्देशीय आर्द्रभूमि में पीटलैंड,दलदल,नदियाँ और प्राकृतिक झीलें शामिल हैं, जैसे की सुल्तानपुर झील। तीसरी श्रेणी में मानव निर्मित चावल के धान,जल भंडारण निकाय जैसे जलाशय,साल्टपैन,जलीय कृषि तालाब और अपशिष्ट जल उपचार तालाब और गीले घास के मैदान शामिल हैं।

एक तरह से आर्द्रभूमियाँ प्रकृति के आघात अवशोषक के रूप में कार्य करती हैं। नदी घाटियों में पीटलैंड और गीले घास के मैदान प्राकृतिक स्पंज के रूप में कार्य कर वर्षा को सोख लेती हैं। एक तरफ इनकी विस्तृत सतह नदियों और नदियों में बाढ़ को रोकने का काम करती हैं तो दूसरी तरफ यह भंडारण क्षमता सूखे से बचाव में भी मदद करती है। तटीय आर्द्रभूमियाँ जैसे मैंग्रोव, खारीय दलदल और मूंगा चट्टानें तटरेखाओं की रक्षा करती हैं और लहरों और तूफानी लहरों के प्रभाव को कम करके कटाव को रोकती हैं। इसके अलावा आर्द्रभूमियाँ जैव विविधता को बनाये रखने के लिए बहुत महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। आर्द्रभूमि विभिन्न जीव-जंतुओं पक्षियों के प्रजनन और प्रवास के लिए आवश्यक हैं।

विश्व में मीठा पेय जल 3% से भी कम है और इसका भी अधिकांश हिस्सा जमा हुआ है। आर्द्रभूमियाँ मीठा पेय जल की आपूर्ति सुनिश्चित करती हैं। यही नहीं,ये करोडो लोगों को टिकाऊ उत्पाद और आजीविका (मछली पकड़ने और जलीय कृषि) का साधन और खाद्य आपूर्ति प्रदान करती हैं। जलवायु परिवर्तन जैसे ग्लोबल वार्मिंग को रोकने के लिए भी आर्द्रभूमियाँ का विशेष योगदान है।

1971 में रामसर,ईरान के एक शहर में, वेटलैंड्स पर कन्वेंशन बनाया गया था जोकि एक अंतरसरकारी संधि है जिसका मिशन "संरक्षण" है। स्थानीय,क्षेत्रीय और के माध्यम से सभी आर्द्रभूमियों का बुद्धिमानीपूर्ण उपयोग राष्ट्रीय कार्य और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के द्वारा किया जाता है। आज दुनिया भर में 2,220 से अधिक आर्द्रभूमियाँ शामिल हैं।

भारत में 82 रामसर स्थल हैं, ये आर्द्रभूमियाँ हैं जिन्हें रामसर कन्वेंशन के तहत "अंतर्राष्ट्रीय महत्व" के रूप में जाना जाता है। हाल में बिहार के नागी और नकटी पक्षी अभयारण्यों को रामसर सूची में शामिल करके भारत ने विश्व स्तर पर संयुक्त रूप से तीसरा स्थान चीन के साथ हासिल किया है।

अब हम आपको केरल के २ रामसर स्थल, वेम्बनाड कोल वेटलैंड और अष्टमुडी झील की सैर करवाएंगे। वेम्बनाड कोल वेटलैंड को २००२ में अंतरराष्ट्रीय महत्व की आद्रभूमि, रामसर सूची में शामिल किया गया था। यह २०००० से अधिक जलपक्षियों का घर है, जो भारत में तीसरी सबसे बड़ी आबादी है। यहां जलकाग प्रजनन के लिए आते है। वेम्बनाड झील के तट पर कुमारकोम में स्थित कुमारकोम पक्षी अभयारण्य (वेम्बनाड पक्षी अभयारण्य) केरल राज्य के कोट्टायम जिले में सुन्दर स्थल है। केरल बैकवाटर्स में स्थित,पक्षी अभयारण्य में कई प्रवासी पक्षी प्रजातियाँ आती हैं।

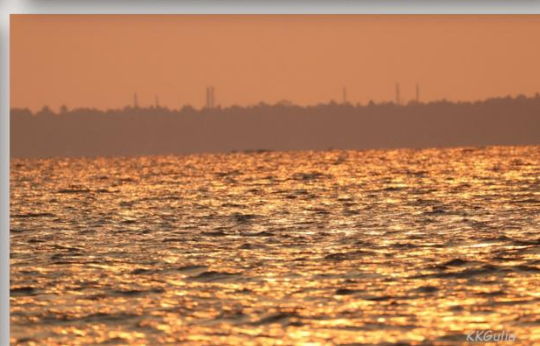

वहीँ पास में थन्नेरमुक्कम बंद जोकि एक साल्ट वॉटर बैरियर है। इसको देखना और समझना भी जरुरी है। इसका निर्माण 1974 में कुट्टनाड विकास योजना के एक भाग के रूप में किया गया था जिससे पश्चिम में थन्नेरमुक्कोम और पूर्व में वेचूर के बीच वेम्बनाड झील के पार कुट्टनाड की निचली भूमि में ज्वार की कार्रवाई और खारे पानी की घुसपैठ को रोका जा सके। यह अवरोध मूल रूप से झील को दो भागों में विभाजित करता है, एक जिसमें बारहमासी खारा पानी होता है और दूसरे आधे हिस्से में झील में गिरने वाली नदियों द्वारा पोषित ताज़ा पानी होता है। यह भारत में सबसे बड़ा मिट्टी नियामक है।

अष्टमुडी झील (अष्टमुडी कयाल) केरल के कोल्लम जिले में एक अद्वितीय आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी तंत्र है। यह राज्य में वेम्बनाड मुहाना पारिस्थितिकी तंत्र के बाद दूसरे स्थान पर है। मलयालम भाषा में अष्टमुडी का अर्थ है आठ पहाड़ियाँ या चोटियाँ। यह आठ छोटे टापुओं का एक समूह है जिसका कुल क्षेत्रफल लगभग १३.४ वर्ग किमी है। यह एक दूसरी सबसे बड़ी मुहाना प्रणाली है जो अपने जलवैज्ञानिक कार्यों,अपनी जैव विविधता और मछली समर्थन के लिए असाधारण महत्व रखती है। यह कई मैंग्रोव प्रजातियों के साथ-साथ ४० से अधिक संबंधित पौधों की प्रजातियों और पक्षियों की ५७ प्रजातियों के संरक्षण में योगदान करती हैं। हजारों मछुआरे अपनी आजीविका के लिए इस मुहाने पर निर्भर रहते हैं।

इस लेख को पढने तो बाद शायद हम अनुमान लगा सकते है कि विभिन्न प्रकार की आद्रभूमियाँ हमारे जीवन संरक्षण के लिए कितनी उपयोगी है। यदि पृथ्वी पर जीवित रहना है तो प्रत्येक व्यक्ति को इस कार्य में महत्वपूर्ण योगदान देना पड़ेगा।

कमलेश के गुलिया, पी एच डी
वैज्ञानिक जी एफ प्रभारी, निद्रा अनुसंधान विभाग
बायोमेडिकल टेक्नोलॉजी विंग, सैटलमॉन्ड पैलेस
श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम
(भारत सरकार के अधीन राष्ट्रीय महत्व का संस्थान)
पूजापुरा, तिरुवनंतपुरम 695012, केरल, भारत

कविता

नन्हीं किरण कुछ कह गई...

शाम के खुले आकाश में, सूरज ढल रहा था,
भूमि पर शांति की छांव फैल रही थी।
गाते हुए पक्षियों की आवाज़ मन को मुग्ध कर रही थी,
तभी सूर्य की नन्ही किरण स्पर्श कर गई और मानों कुछ कह रही थी कि।

प्रत्येक जीवन में कई उतार-चढ़ाव हैं,
हर एक क्षण नया है, हर एक अनुभव नया है।
हर मंजिल नई है, हर सोच नई है,
अगर मेरी तरह से देखो, नई है ये दुनिया।

मैं हर रोज नई जगहों पर जाती हूँ,
कभी हिमालयों की पहाड़ियों पर,
तो कभी अमेज़न के घने जंगलों में।
फिर भी मैं हरेक कोने पर पहुँच नहीं पाती हूँ।

इसीलिए तुम भी हर दिन नएअवसर को खोजो,
उन जगहों पर भी जाओ जहाँ मैं कदम नहीं रख पाई।
उठो, खड़े हो, परिश्रम करो, जोशभरो,
हर दिन नए सोच लाओ, नएअविष्कार करो।

यही जीवन की सच्चाई है,
यही उसकी पहचान है,
नए दृष्टिकोण से देखो, नए सपनों को पहचानो,
जीवन का हर कदम एक नई उड़ान है।

अरविन्द कुमार प्रजापति
वैज्ञानिक/इंजीनियर 'सी'
एआईओ,डीएमडीई,
बीएमटी विंग एस.सी.टी.आई.एम.एस.टी.

रिपोर्ट

ए जी चित्रा ट्यूबरकुलोसिस डायग्नोस्टिक किट का राष्ट्रीय लॉन्च

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, (एससीटीआईएमएसटी), तिरुवनंतपुरम द्वारा विकसित ए जी चित्रा ट्यूबरकुलोसिस डायग्नोस्टिक किट को 8 अप्रैल 2024 को जैव चिकित्सा प्रौद्योगिकी स्कंध में आयोजित एक औपचारिक समारोह में लॉन्च किया गया था। एससीटीआईएमएसटी ने फुफ्फुसीय तपेदिक का किफायती, तेज और सटीक निदान प्रदान करने के लिए इस किट को एक खुले मंच प्रणाली के रूप में विकसित किया है। इस प्रौद्योगिकी का लाइसेंस कोच्चि में मेसर्स अगप्पे डायग्नोस्टिक्स को दिया गया है। सफल स्वतंत्र सत्यापन के बाद, केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) ने विनिर्माण और व्यावसायीकरण के लिए किट को मंजूरी दे दी है।

एससीटीआईएमएसटी के अध्यक्ष डॉ. वी.के. सारस्वत ने औपचारिक तौर पर तपेदिक स्क्रीनिंग किट लॉन्च की। उन्होंने एक ऐसी किट के महत्व पर प्रकाश डाला जो संदिग्ध तपेदिक के लिए एक बड़ी आबादी की जांच कर सके। एससीटीआईएमएसटी द्वारा विकसित टीबी किट का उपयोग किसी भी क्यूपीसीआर मशीन में किया जा सकता है, जिसका अर्थ है कि महामारी के दौरान स्थापित मौजूदा कोविड-19 परीक्षण बुनियादी ढांचे का उपयोग बड़े पैमाने पर तपेदिक जांच के लिए किया जा सकता है। उन्होंने देश के प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में एससीटीआईएमएसटी के उल्लेखनीय योगदान पर जोर दिया।

अपने भाषण के दौरान, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव प्रोफेसर अभय करंदीकर ने चिकित्सा प्रौद्योगिकियों के विकास में उत्कृष्ट ट्रैक रिकॉर्ड के लिए एससीटीआईएमएसटी की प्रशंसा की। उन्होंने विशेष रूप से संस्थान के वैज्ञानिकों, अभियंताओं और चिकित्सकों के बीच अद्वितीय सहयोग की सराहना की, जो इसे देश के अन्य संस्थानों से अलग करता है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि एससीटीआईएमएसटी द्वारा विकसित एजी चित्रा ट्यूबरकुलोसिस डायग्नोस्टिक किट को जल्द ही राष्ट्रीय क्षय रोग नियंत्रण कार्यक्रम में शामिल किया जाएगा। उनका मानना था कि यह किट तपेदिक के लिए जनसंख्या की जांच करने में महत्वपूर्ण अंतर ला सकती है।

डॉ. अनूप तेक्कुवीट्टिल, वैज्ञानिक जी और ए जी चित्रा ट्यूबरकुलोसिस किट विकास के टीम लीडर ने बीमारी के लिए डायग्नोस्टिक किट बनाने में टीम के प्रयासों के बारे में बात की। उन्होंने किट की अनूठी विशेषताओं पर प्रकाश डाला, जैसे प्रारंभिक चरण में बीमारी की पहचान करने में इसकी उच्च सटीकता, अल्ट्रा-लो कोल्ड चेन सुविधा की आवश्यकता के बिना आसान परिवहन और इसका खुला प्लेटफ़ॉर्म डिज़ाइन। उन्होंने कार्यक्रम को लागू करने में आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए राज्य टीबी केंद्र, डब्ल्यूएचओ भारत कार्यालय और स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय की टीम को भी धन्यवाद दिया।

अगप्पे डायग्नोस्टिक्स की निदेशक श्रीमती मीना थॉमस ने एससीटीआईएमएसटी और उद्योग के बीच उपयोगी सहयोग पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि एससीटीआईएमएसटी का सामाजिक रूप से प्रासंगिक शोध अगप्पे को बाजार के लिए अत्यधिक सफल उत्पाद तैयार करने के लिए उद्योग के ज्ञान और विशेषज्ञता का लाभ उठाने के लिए प्रेरित करता है।

एससीटीआईएमएसटी के निदेशक प्रोफेसर संजय बिहारी ने अपने स्वागत भाषण में भारतीय आबादी में तपेदिक निदान के महत्व को रेखांकित किया। बीएमटी स्कंध के प्रमुख डॉ. हरिकृष्ण वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

लेख

बायोलुमिनसेंस का जादू: प्रकृति की प्रकाशमान घटना"

बायोलुमिनसेंस, दुनिया भर के महासागरों और यहां तक कि जमीन पर पाई जाने वाली एक मनोरम प्राकृतिक घटना है, जो अपनी रहस्यमय चमक से वैज्ञानिकों और उत्साही लोगों को समानरूप से आकर्षित करती रहती है। सूक्ष्म से लेकर गहरे समुद्र केजीवों तक विभिन्न प्रकार के जीवों द्वारा प्रदर्शित यह असाधारण क्षमता, उनके जीवन और पारिस्थितिकी तंत्र में विभिन्न उद्देश्यों को पूरा करती है। साथियों को आकर्षित करने से लेकर दुश्मनों से बचने तक बायोल्यूमिनसेंस संचार, जीवित रहने और पनपने केलिए प्रकाश का उपयोग करने में प्रकृति की रचनात्मकता को प्रदर्शित करता है।

यह जीवित जीवों द्वारा प्रकाश का जैवरासायनिक उत्सर्जन है। यह एक अत्यधिक कुशल प्रक्रिया है जो लूसिफ़ेरिन (एक प्रकाश उत्सर्जक अणु), ऑक्सीजन और एंजाइम लूसिफ़ेरेज़ से जुड़ी रासायनिक प्रतिक्रिया के माध्यम से होती है। इस प्रतिक्रिया के परिणाम स्वरूप महत्वपूर्ण ऊष्मा के बिना प्रकाश निकलता है, जिससे यह अन्य प्रकाश स्रोतों की तुलना में प्रकाश उत्पन्न करने का एक ऊर्जा-कुशल तरीका बन जाता है। यह मनमोहक घटना जीवों के किसी एक समूह तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह विभिन्न प्रजातियों में पाई जाती है। गहरे समुद्र में रहने वाले जीव जैसे एंगलरफिश अंधेरे में शिकार को आकर्षित करने के लिए बायोलुमिनसेंट प्रलोभन का उपयोग करते हैं जहां सूरज की रोशनी प्रवेश नहीं कर पाती है। भूमि पर जैक-ओ-लैंटर्नमशरूम जैसे बायोल्यूमिनसेंट कवक एक भूतिया हरी चमक उत्सर्जित करते हैं और जुगनू साथियों को आकर्षित करने के लिए प्रकाश की चमक पैदा करते हैं।

बायोलुमिनसेंस के अध्ययन ने सदियों से वैज्ञानिकों को आकर्षित किया है, जिससे नई प्रजातियों की खोज हुई है और यह पता चला है कि ये जीव प्रकाश का उत्पादन और उपयोग कैसे करते हैं। शोधकर्ताओं ने बायोमेडिकल इमेजिंग और पर्यावरण निगरानी जैसे विभिन्न जैव प्रौद्योगिकी अनुप्रयोगों में उपयोग के लिए बायोल्यूमिनसेंट प्रोटीन और जीन विकसित किए हैं। बायोलुमिनसेंस कलाकारों, लेखकों और फिल्मनिर्माताओं को अपनी सुंदरता और समुद्र की गहराई में या जंगल के सबसे अंधेरे कोनों में जीवन के बारे में शानदार कल्पनाओं से दर्शकों को मंत्र मुग्ध करने के लिए प्रेरित करता रहता है।

पारिस्थितिक तंत्र जहां बायोलुमिनसेंस जीव रहते हैं, उन्हें जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और आवास विनाश सहित कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इन पर्यावरणों की रक्षा करना न केवल बायोलुमिनसेंट प्रजातियों के संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि पारिस्थितिक संतुलन और उनके द्वारा प्रदान की जानेवाली सेवाओं को बनाए रखने के लिए भी महत्वपूर्ण है।

बायोलुमिनसेंस समुद्र की गहराई से लेकर जंगलों और खेतों तक प्रकृति के सबसे आकर्षक रहस्यों में से एक बना हुआ है। अंधेरे में चमकने वाले जीव जीव विज्ञान के बारे में हमारी समझ को रोशन करते हैं, तकनीकी नवाचारों को प्रेरित करते हैं और हमें प्राकृतिक दुनिया की गहन सुंदरता और जटिलता की याद दिलाते हैं। जैसे-जैसे हम अपने ग्रहका पता लगाना और उसकी रक्षा कर नाजारी रखतेहैं, बायोलुमिनसेंस उन आश्चर्यों की एक चमकदार याद दिलाता है जो खोज की प्रतीक्षा कर रहे हैं और भविष्य की पीढ़ियों के लिए हमारी प्राकृतिक विरासत को संरक्षित करने के महत्व के रूप में कार्य करता है।

अल्का अशोक टी
कार्यकारी सहायक - बी

कविता

मेरी मां

मां मेरी सबसे पहली सहेली थी।
मां मेरी सबसे अच्छी सहेली थी।
बचपन में वह जब मुझे बार बार बुलाती थी,
तब मैं उनसे बहुत तंग हो जाती थी।
पूछती थी मैं उन्हें की "मां तुम्हें और कोई काम नहीं है ?"
हमेशा वह मुझे सताती थी, मुझे भागने नहीं देती,
बोलती थी "अरे बेटा, तू गिर जाएगी। "
बार बार मुझे खाना खिलाती थी, कहती थी
"अरे बेटा तू कमज़ोर हो जाएगी "।
ज्यादा सजने सवरने नहीं देती थी मुझे,
बोलती थी "अरे बेटा, तुझे मेरी ही नज़र लग जाएगी।
जब जब वह मुझे सताती थी, पूछती थी मैं,
"मां तुम्हें और कोई काम नहीं है ?"
पर अब जो वह मुझे छोड़के गई है।
मुझे अकेला छोड़के गई है।
अब मुझे सतानेवाला और कोई नहीं है ,
मुझे मनानेवाला भी और कोई नहीं है।
लगता है कि वह मुझसे रूठ गई है ,
या मुझसे लुका –छुप्पी खेल रही है।
अब तो मेरी एक ही ख्वाहिश है
"मां, एक बार मुझे तू बुलाओ तो सही
एक निवाला प्यार का खिलाओ तो सही

कावेरी बी एस
उच्च श्रेणी लिपिक –बी

रिपोर्ट

अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस समारोह 2024

फ्लोरेंस नाइटिंगेल के जन्म दिवस पर हर 12 मई को दुनिया भर में अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस मनाया जाता है। अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस 2024 के लिए अंतर्राष्ट्रीय नर्स परिषद द्वारा घोषित थीम **"हमारी नर्सें" । हमारे भविष्य। देखभाल की आर्थिक शक्ति "** । इसका उद्देश्य धारणाओं को नया आकार देना और यह प्रदर्शित करना है कि नर्सिंग में रणनीतिक निवेश कैसे महत्वपूर्ण आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन ला सकता है। देखभाल की आर्थिक शक्ति स्वस्थ लोगों और समाजों का निर्माण करती है और स्वस्थ अर्थव्यवस्थाओं को चलाती है।

समारोह के हिस्से के रूप में नर्सिंग प्रभाग द्वारा खेल और कला, वैज्ञानिक पेपर प्रस्तुति और प्रश्नोत्तरी सहित विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। यह समारोह 11 मई 2024 को शाम 4.00 बजे से आधिकारिक उद्घाटन और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ 'निशाना-2024' के साथ समाप्त हुआ। श्रीमती अनसूया आर, सहायक नर्सिंग अधीक्षक ने सभा का स्वागत किया। श्रीमती निर्मला एम ओ नर्सिंग अधीक्षक ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस 2024 की थीम के बारे में बताया। कार्यक्रम का उद्घाटन प्रोफेसर डॉ. कविता राजा, चिकित्सा अधीक्षक द्वारा किया गया और सम्मानित अतिथि श्री एन एस सुमेश कृष्णन, प्रसिद्ध मलयालम कवि और वक्ता थे। माननीय निदेशक डॉ. संजय बिहारी ने अपने संदेश के साथ इस कार्यक्रम की सराहना की और उन्होंने सभी नर्सों को अपनी शुभकामनाएं दीं। डॉ. मंजू नायर आर, सहायक चिकित्सा अधिकारी, डॉ. विजयम्मा हरिकृष्णन, सेवानिवृत्त नर्सिंग अधीक्षक (एससीटीआईएमएसटी), श्रीमती लीना आर.के., उप नर्सिंग अधीक्षक, और श्रीमती सुजा राज एल लेक्चरर इन नर्सिंग ने इस कार्यक्रम का अभिनंदन किया। कार्यक्रम में वर्ष 2024 - 25 में सेवानिवृत्त होने वाले नर्सिंग अधिकारियों का सम्मान किया गया। आधिकारिक उद्घाटन श्रीमती अनिला रानी वी.एस. के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ समाप्त हुआ। उद्घाटन के बाद कर्मचारियों, छात्रों और कर्मचारियों के परिवार के सदस्यों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रम का समापन हमारे संस्थान के "चित्रमल्हार" समूह के मधुर "गानामाला" के साथ हुआ। हमारे सेवानिवृत्त नर्सिंग अधिकारियों की विभिन्न कार्यक्रमों में उपस्थिति एवं भागीदारी ने इसे यादगार बना दिया।

'निशाना-2024' का उद्घाटन समारोह

खेल प्रतियोगिताएं

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

वैज्ञानिक पेपर प्रस्तुति

सांस्कृतिक कार्यक्रम

विश्व नींद दिवस (15 मार्च 2024)
विषय वस्तु : वैश्विक स्वास्थ्य के लिए नींद की समानता

विश्व नींद दिवस 15 मार्च 2024 को बीएमटी स्कंध, एससीटीआईएमएसटी, पूजापुरा के एम एस वैलियत्तान मेडिकल डिवाइसेस और इंजीनियरिंग ब्लॉक के संगोष्ठी कक्ष में मनाया गया। इस अवसर पर, नींद अनुसंधान प्रभाग के प्रभारी डॉ.कमलेश के गुलिया ने इस जागरूकता कार्यक्रम के उद्देश्य और महत्व की सराहना करते हुए सभा का स्वागत किया जो अब विश्व स्तर पर मनाया जाता है। डॉ. गुलिया ने एससीटीआईएमएसटी के माननीय निदेशक डॉ. संजय बिहारी द्वारा भेजा गया विश्व नींद दिवस संदेश पढ़ा: ''नींद अच्छे निर्णय और लचीले तर्क को सुगम बनाती है । सपनों के रचनात्मक कार्य को कम करके नहीं आंका जा सकता। नींद स्मृति को मजबूत करने में मदद करती है और संबंधपरक और रचनात्मक यादों को एकीकृत करती है। नींद को होमियोस्टैटिक सर्कैडियन लय, नींद/जागने के चक्र द्वारा नियंत्रित किया जाता है। हमारे मस्तिष्क में 24 घंटे की आंतरिक घड़ी हमारे वातावरण में होने वाले हल्के बदलावों पर प्रतिक्रिया करके सतर्कता और तंद्रा का चक्र बनाती है। हाइपोथैलेमस में प्रकाश संवेदनशील पैरावेंट्रिकुलर न्यूक्लियस और सुप्राचैस्मैटिक न्यूक्लियस के बीच संबंध सर्कैडियन विनियमन में शामिल होते हैं। एड्रेनोकोर्टिकोट्रॉफ़िक हार्मोन की दैनिक विविधताएं किसी व्यक्ति के सर्कैडियन पैटर्न को निर्धारित करने में प्रभावशाली होने के रूप में अच्छी तरह से पहचानी जाती हैं। आनुवंशिक प्रभाव और आदत पैटर्न किसी व्यक्ति में नींद के पैटर्न को और अधिक प्रभावित करते हैं। इस प्रकार, "नींद" के विज्ञान में कई प्रभाव हैं जो इसे शोध के लिए एक बहुत ही रोमांचक विषय बनाते हैं। मैं डॉ.कमलेश गुलिया और उनकी टीम को सभी जीवित प्राणियों की इस अनूठी विशेषता के रहस्यों को जानने की उनकी निरंतर खोज के लिए बधाई देता हूं, जो उनकी दैनिक दिनचर्या का लगभग एक तिहाई से आधा हिस्सा लेती है, और स्वास्थ्य और बीमारी के निर्धारण में इसका बहुत बड़ा योगदान है ''।

जैव चिकित्सा प्रौद्योगिकी स्कंध के प्रमुख डॉ. हरिकृष्ण वर्मा ने उद्घाटन भाषण दिया और स्वास्थ्य के लिए नींद के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने ऑब्सट्रक्टिव एपनिया और अन्य नींद संबंधी विकारों के प्रबंधन में तकनीकी नवाचारों की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि नींद के प्रति जागरूकता लाने के लिए डॉ. गुलिया द्वारा हर वर्ष विश्व नींद दिवस का आयोजन सावधानीपूर्वक किया जाता है।

डॉ. गुलिया ने नींद की समानता और वैश्विक स्वास्थ्य के विभिन्न पहलुओं पर आधारित एक विचारोत्तेजक वृत्तचित्र प्रस्तुत किया। उन्होंने उम्र के साथ शुरू होने वाली नींद की समानता के बहुआयामी पहलुओं पर चर्चा की क्योंकि विभिन्न आयु समूहों (नवजात शिशु, बच्चे, गर्भावस्था, रजोनिवृत्ति, उम्र बढ़ने) के लिए नींद की आवश्यकताएं अलग-अलग होती हैं, इसके बाद सामाजिक आर्थिक कारकों, घर होने, सामाजिक कारकों के आधार पर सोने के अवसर पर बातचीत हुई। परिवार, नौकरी, सामाजिक सुरक्षा (अस्पताल में भर्ती होने के खर्च के लिए), भूमंडलीरण, लंबे समय तक चलने वाले युद्ध/संघर्ष और महामारी आदि। उन्होंने अच्छे मानसिक स्वास्थ्य के लिए गुणवत्तापूर्ण नींद की आवश्यकता पर जोर दिया, जो आज की दुनिया में प्रमुख स्वास्थ्य मुद्दा है जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। अनुप्रयुक्त जीवविज्ञान विभाग के प्रमुख का प्रतिनिधित्व करते हुए डॉ. सब्रीश्वरन ए ने नींद दिवस संदेश दिया और बाद के सत्रों की अध्यक्षता की। यह हर किसी के लिए नींद के बारे में और अधिक समझने का अवसर है क्योंकि यह एक बुनियादी शारीरिक आवश्यकता है, और उल्लेख किया गया है कि कोई भी व्यक्ति अनुशासित जीवनशैली अपनाकर गुणवत्तापूर्ण नींद का आनंद ले सकता है।

मेरी नींद नामक विशेष सत्र में, हाल ही में मां बनने वाली सुश्री श्रीदेवी वी (तकनीकी सहायक, इंस्ट्रुमेंटेशन-बी, एक्स्ट्राकोर्पोरियल डिवाइसेस प्रभाग से) ने गर्भावस्था के दौरान और प्रसव के बाद अपनी नींद के बारे में अनुभव साझा किए और बताया कि कैसे वह अपने पति और परिवार के सदस्यों के ठोस प्रयासों से अच्छी नींद लेने में कामयाब रही । सुश्री कृपामोल आर (पीएचडी विद्वान, ऊतक संस्कृति विभाग) ने छात्रावास जीवन में नींद की समस्याओं के बारे में अपने अनुभव साझा किए और अनुसंधान कार्य में उत्पादकता बढ़ाने के लिए इससे प्रभावी ढंग से निपटने के सुझाव दिए।

इसके बाद डॉ बिजु सोमान, प्रोफेसर एवं प्रमुख, अच्युत मेनोन स्वास्थ्य विज्ञान अध्ययन केंद्र द्वारा साउंड स्लीप: एक सार्वजनिक स्वास्थ्य परिप्रेक्ष्य विषय पर नींद दिवस विशेष व्याख्यान दिया गया । डॉ. सोमन ने समानता का वर्णन किया और हाल के अध्ययनों का हवाला देते हुए सुरुचिपूर्ण प्रस्तुति के माध्यम से बताया कि कैसे गुणवत्तापूर्ण नींद गैर-संचारी रोगों से निपटने में मदद कर सकती है जो वर्तमान जीवनशैली में बहुत बड़े पैमाने पर व्याप्त हैं। दूसरा व्याख्यान कृत्रिम आंतरिक अंगों के प्रभाग, सुभाष एनएन, अभियंता द्वारा नींद में सुधार के लिए वृद्धावस्था एवं सहायक प्रौद्योगिकियों पर दिया गया, जिसमें बाजार में स्टार्ट-अप द्वारा उपलब्ध उपकरणों पर अपडेट प्रदान किया गया।

इस अवसर के लिए बनाई गई एक विशेष स्मारिका, वर्ल्ड स्लीप डे लोगो वाला मैजिक कॉफी मग, जो शाम के बाद कॉफी/चाय के सेवन में कमी की याद दिलाता है, सभी वक्ताओं को प्रस्तुत किया गया। विश्व नींद दिवस समारोह का आयोजन नींद अनुसंधान प्रभाग, अनुप्रयुक्त जीवविज्ञान विभाग, बीएमटी स्कंध द्वारा किया गया था। कार्यक्रम का संचालन नींद अनुसंधान प्रभाग की परियोजना कर्मचारी सुश्री शानी द्वारा किया गया। कार्यक्रम के दौरान नींद संबंधी जागरूकता के लिए स्लीप रिसर्च विभाग के पीएचडी छात्रा सुश्री अर्शज्योतिस्मयी वी द्वारा तैयार किए गए दो मिनी पोस्टर प्रदर्शित किए गए।

MIDNIGHT
24.00
CIRCADIAN
RHYTHM
18.00
06.00
NOON
12.00
World Sleep Day
Sound Sleep: A Public Health Perspective
March 15, 2024
Dr Biju Soman,
MBBS, MD, DPH, DLSHTM, MSc
Professor & Head
Achutha Menon Centre for Health Science Studies
Sree Chitra Tirunal Institute for Medical Sciences & Technology, Trivandrum
UPS
NON UPS

SCTIMST
An Institution of National Importance
under Department of Science and Technology, Govt. of India
BIOMEDICAL TECHNOLOGY WING

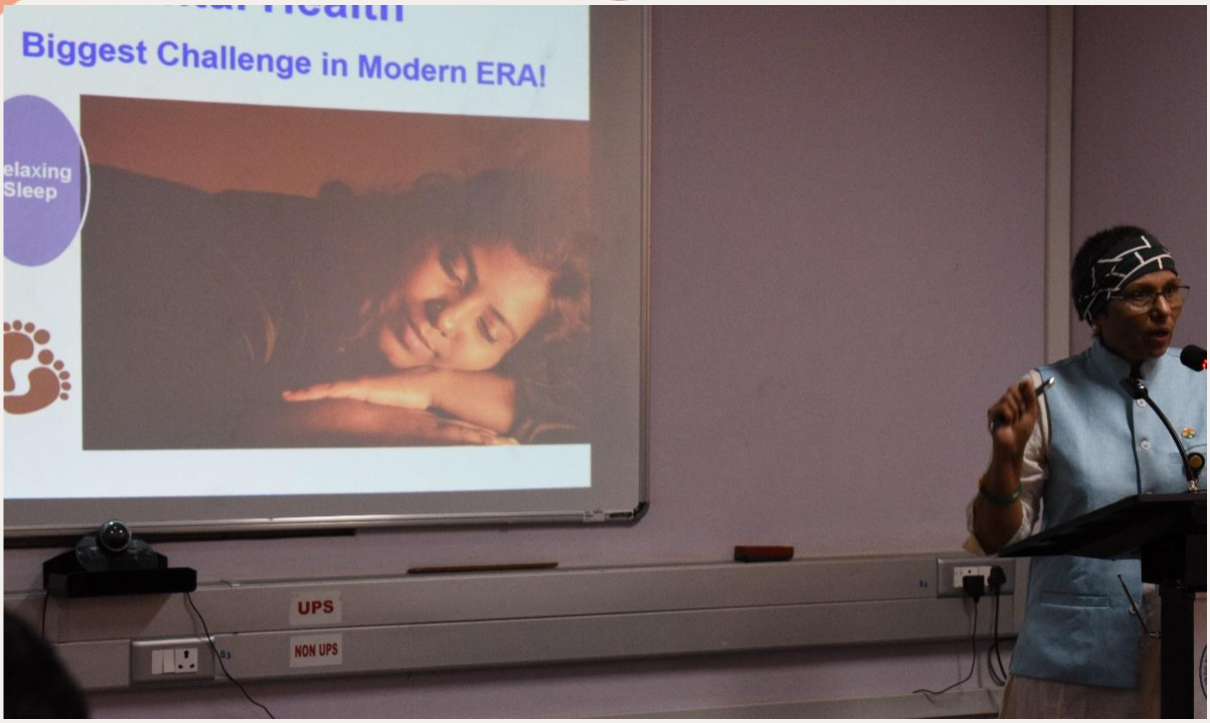
Biggest Challenge in Modern ERA!
elaxing
Sleep
UPS
NON UPS

SCTIMST
An Institution of National Importance
under Department of Science and Technology, Govt. of India
BIOMEDICAL TECHNOLOGY WIN

Update this profile
IPO
Corporate Office
P.O.Box 12117
Herzliya 46733
Israel

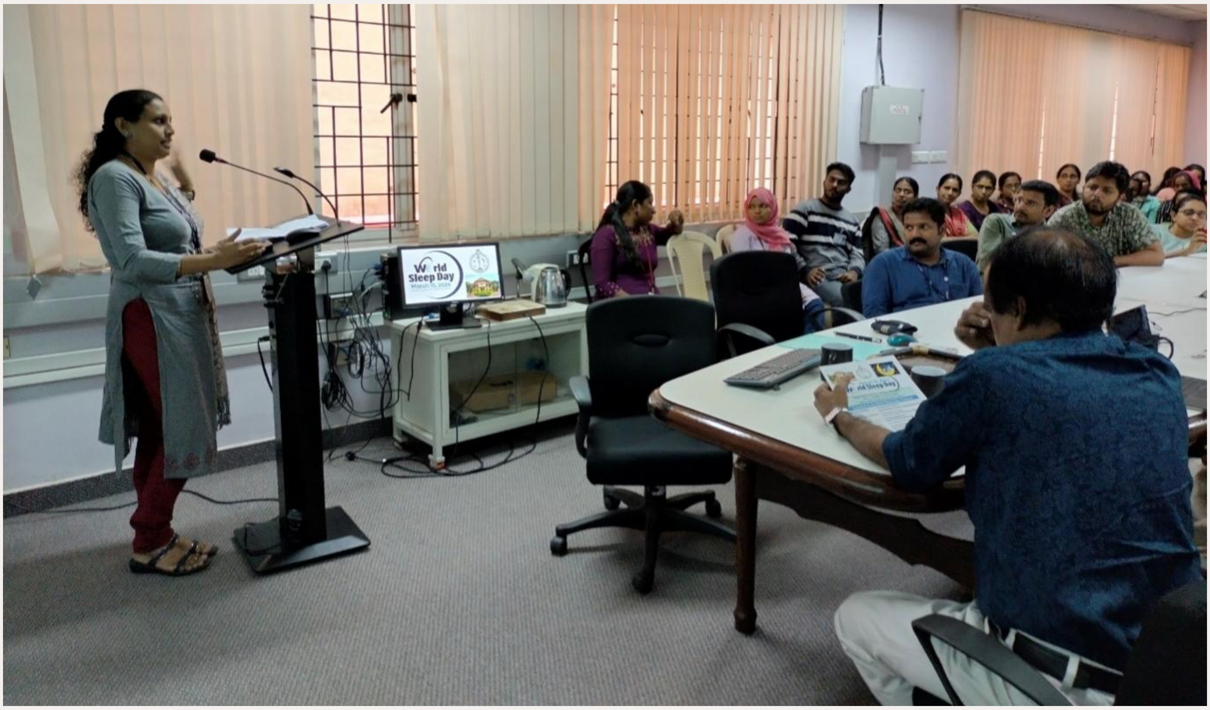

Global Health

Global Health

World Sleep Day

World Sleep Day

World Sleep Day

March 15, 2024

March 15, 2024
World Sleep Day
Sleep Equity for Global Health

कविता

धरती

ये धरती के कितने कहानी है ।
ये सच है कि स्वर्ग और नरक यहाँ है ।
हम आज़ाद होते भी मन में कैद है ।
हिन्दू, ईसाई, मुस्लिम, सिख सभी लड़ते हैं ।
और कहते है हम मानव राशि है ।
फिर भी शोर मचाकर रणभूमि बनाते है ।
क्या इसे कहते है भगवान की भूमि ।
राम और रावण एक ही मन में रहते हैं ।
जिंदा होकर भी हम मर रहे हैं ।
जैसे पिरामिड के मम्मी की तरह जीते हैं ।
सोना है पैसा है फिर भी शांति नहीं
क्या इसी को कहते है भगवान की धरती ।
ये सब देखकर भूमिदेवी रो रही है ।
हम बनाते है अपने जीवन की कीमत ।
रक्षा बंधन से रक्षा मिलेगा क्या ?

डॉ जिजि टी एस
चिकित्सा सामाजिक कार्यकर्ता –बी

रिपोर्ट

स्मृतिवनोल्सव 2024

स्मृतिवनम परियोजना का उद्देश्य सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारी द्वारा संस्थान से स्मृति के रूप में एक पौधा लगाना और पदधारी को विदाई देना भी है। इस अभूतपूर्व परियोजना के ढांचे में, दिनांक 24.01.2024 को जैव चिकित्सा प्रौद्योगिकी स्कंध, पूजापुरा में स्मृतिवनोलसव के रूप में एक पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया है। इस कार्यक्रम को उन सेवानिवृत्त कर्मचारियों के पुनर्मिलन के रूप में मनाने की योजना बनाई गई थी जिन्होंने स्मृतिवनम में पौधे लगाए थे। जैव चिकित्सा प्रौद्योगिकी स्कंध, अस्पताल स्कंध, एएमसीएचएसएस के कर्मियों और 2024 में सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। इस कार्यक्रम का नेतृत्व स्मृतिवनम समिति ने किया।

कार्यक्रम की शुरुआत श्री सजितलाल एम के, अध्यक्ष, स्मृतिवनम समिति [अभियंता -एफ, इंजीनियरिंग सेवा प्रभाग, बीएमटी स्कंध] की प्रस्तावना के साथ हुई है। उन्होंने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और स्मृतिवनम परियोजना के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।

एससीटीआईएमएसटी के निदेशक प्रोफेसर संजय बिहारी ने सेवानिवृत्त कर्मचारियों को उनकी सेवाओं के लिए धन्यवाद दिया है और उनके स्वास्थ्य, खुशी, सफलता और समृद्धि के साथ एक सुखद जीवन की कामना की है। उन्होंने कहा कि सेवानिवृत्त कर्मचारियों की कड़ी मेहनत, समर्पण, उपलब्धियों और उत्साह ने कार्यस्थल को इतना रोशन कर दिया है कि उसकी बराबरी कभी नहीं की जा सकती। उन्होंने आगे कहा कि सेवानिवृत्त कर्मचारियों की विशेषज्ञता और मार्गदर्शन प्रख्यात है और यह हमारे संस्थान की सफलता में सहायक रहा है। उन्होंने कहा कि सेवानिवृत्ति को यादगार बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है और कहा कि संस्थान के प्रति उनकी सेवा हमेशा याद रहेगी।

डॉ अजित कुमार वी.के. (पूर्व निदेशक, एससीटीआईएमएसटी) ने एससीटीआईएमएसटी में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए सेवानिवृत्त कर्मचारियों की सराहना की है। उन्होंने कर्मचारियों के साथ बिताए पलों को याद किया और कहा कि सेवानिवृत्ति एक नए अध्याय की शुरुआत है और उनके सुखद जीवन की कामना की। उन्होंने बताया कि सेवानिवृत्ति के बाद ही, किसी को संस्थान में करियर के महत्व और समय के साथ विकसित हुए बंधन का एहसास होगा।

डॉ. हरिकृष्ण वर्मा पी.आर. (प्रमुख, बीएमटी स्कंध) ने निर्दिष्ट किया है कि सभी सेवानिवृत्त कर्मचारियों ने अपने काम में एक अमिट छाप छोड़ी है। उन्होंने उल्लेख किया कि उन्होंने जो प्रशंसा, नेतृत्व और दक्षता अर्जित की है वह हमेशा हमारी भविष्य की नवीनता में प्रतिबिंबित होगी। उन्होंने एससीटीआईएमएसटी को बढ़ाने के लिए उनकी जबरदस्त सेवा की सराहना की।

एससीटीआईएमएसटी के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. रूपा श्रीधर ने सेवानिवृत्त कर्मचारियों को उनकी समर्पित सेवाओं और एससीटीआईएमएसटी में बहुमूल्य योगदान के लिए बधाई दी है। उन्होंने कहा कि उनके काम ने संस्थान में उल्लेखनीय बदलाव लाए हैं और उन्हें हमेशा याद रखा जाएगा।

सेवानिवृत्त कर्मचारियों ने पुरानी यादें ताजा कीं और अपने अनुभव साझा किए जिससे सहकर्मियों और अन्य लोगों को प्रेरणा मिली। उन्होंने ऐसे प्रतिष्ठित संस्थान में काम करने के लिए अपनी सराहना व्यक्त की और उनकी सेवा के दौरान उनका समर्थन करने के लिए सहकर्मियों के प्रति अपना आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम में उपस्थित महानुभावों ने सेवानिवृत्त होने वाले कार्मिकों को स्मृति स्वरूप पौधे वितरित किये। सेवानिवृत्त कर्मचारियों ने स्मृति वनम में निर्दिष्ट क्षेत्रों में पौधे लगाए हैं। सराहना के संकेत के रूप में, स्मृति वनम के भूस्वामियों को इसकी स्थापना के दिन से ही इसकी सुरक्षा और पोषण के लिए उपहार दिए जाते हैं।

कार्यक्रम में सभी प्रतिभागियों ने सेवानिवृत्त हो रहे कर्मचारियों को उनके भविष्य के प्रयासों के लिए शुभकामनाएं और सफलता की शुभकामनाएं दीं और तालियों की गड़गड़ाहट से उनका स्वागत किया। कार्यक्रम का समापन श्री विनोद डी, वरिष्ठ तकनीकी सहायक (प्रयोगशाला), जैव रसायन द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

रिपोर्ट

प्रयोगशाला पशुओं के उचित एनेस्थीसिया, एनाल्जेसिया और इच्छामृत्यु द्वारा पशु प्रयोग का शोधन" पर एक दिवसीय कार्यशाला

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान द्वारा आयोजित "प्रयोगशाला जानवरों के उचित एनेस्थीसिया, एनाल्जेसिया और इच्छामृत्यु द्वारा पशु प्रयोग के शोधन" पर एक दिवसीय कार्यशाला 21 फरवरी 2024 को अच्युता मेनोन केंद्र में आयोजित की गई थी। इस कार्यशाला का नेतृत्व प्रायोगिक चिकित्सा विभाग, कोपेनहेगन विश्वविद्यालय, डेनमार्क के प्रोफेसर क्लास स्टिग पीटर एबेल्सन ने किया और प्रयोगशाला पशु विज्ञान प्रभाग के प्रभारी वैज्ञानिक डॉ. हरिकृष्णन वी एस ने पशु मॉडल के शोधन, रक्त निकासी और कृंतक और खरगोश से निपटने की तकनीकें पर व्याख्यान दिया। । इस "प्रशिक्षक को प्रशिक्षित करें" कार्यक्रम में केरल, तमिलनाडु, पुडुचेरी और उत्तर प्रदेश के कई विश्वविद्यालयों के संस्थागत पशु आचार समिति के सदस्यों, प्रयोगशाला पशु पशुचिकित्सकों, पीएचडी गाइड और कॉलेज शिक्षकों ने भाग लिया। इस पाठ्यक्रम में भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, मद्रास पशु चिकित्सा कॉलेज, एमजी विश्वविद्यालय, कालीकट विश्वविद्यालय, केरल पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय और विभिन्न डेंटल और मेडिकल कॉलेजों के प्रतिभागियों ने भाग लिया। पाठ्यक्रम को प्रतिभागियों से अत्यधिक सकारात्मक टिप्पणियाँ प्राप्त हुईं। जैव चिकित्सा प्रौद्योगिकी स्कंध के प्रमुख, डॉ. हरिकृष्ण वर्मा ने संकाय और प्रतिभागियों के साथ बातचीत की और निष्कर्ष निकाला कि एससीटीआईएमएसटी ने हमेशा अच्छे पशु देखभाल मानकों को बढ़ावा दिया है और प्रयोगशाला जानवरों के लाभ के लिए जैव चिकित्सा शोधकर्ताओं को अत्याधुनिक ज्ञान का प्रसार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रायोगिक पशुओं का उपयोग करके प्राप्त गुणवत्तापूर्ण डेटा सुनिश्चित करना ।

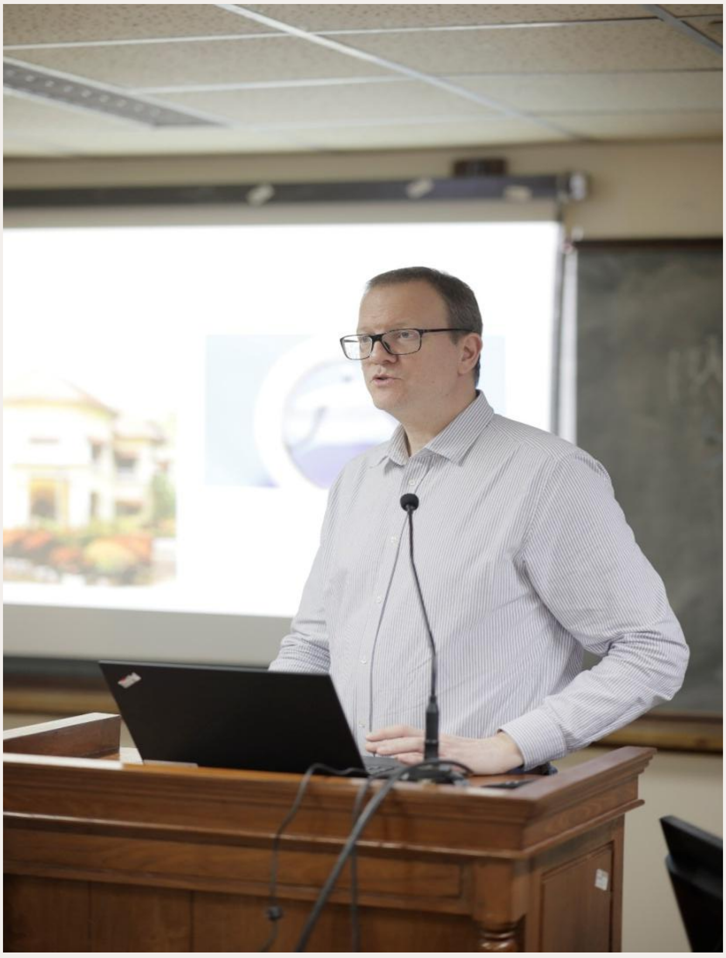

HUTHA MENON CENTRE
FOR
EALTH SCIENCE STUDIES
Sree Chitra Tirunal Institute for Medical Sciences and Technology,
Thiruvananthapuram, Kerala, India
ONE DAY WORKSHOP
"Refinement of Animal Experimentation by Proper Anaesthesia
Analgesia and Euthanasia of Laboratory Animals"

रिपोर्ट

सचिव, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेन्द्रम के दौरे पर एक रिपोर्ट

भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) के सचिव डॉ. अभय करंदीकर ने 13 फरवरी 2024 को चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान (एससीटीआईएमएसटी) तिरुवनंतपुरम का दौरा किया। एससीटीआईएमएसटी डीएसटी के अंतर्गत एक राष्ट्रीय महत्व का संस्थान है। उनके साथ उनकी पत्नी और डीएसटी के एआई प्रभाग के प्रमुख डॉ. मनोरंजन मोहंती भी थे। त्रिवेन्द्रम हवाई अड्डे पर एससीटीआईएमएसटी के निदेशक डॉ. संजय बिहारी और जैव चिकित्सा प्रौद्योगिकी स्कंध के प्रमुख डॉ. एच के वर्मा ने उनका और उनकी टीम का स्वागत किया।

बाद में उन्होंने और उनकी टीम ने संस्थान के जैव चिकित्सा प्रौद्योगिकी स्कंध (बीएमटी) का दौरा किया। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने बीएमटी स्कंध में उनका स्वागत किया। संगोष्ठी कक्ष में बीएमटी स्कंध के वरिष्ठ वैज्ञानिकों के साथ एक संक्षिप्त बैठक आयोजित की गई। एससीटीआईएमएसटी के निदेशक ने उन्हें और उनकी टीम को वैज्ञानिकों से परिचित कराया। बैठक के दौरान, बीएमटी स्कंध के प्रमुख ने संस्थान, इसके अधिदेश, अनुसंधान के फोकस क्षेत्रों, विकसित चिकित्सा उपकरणों और इसके अनुवादात्मक अनुसंधान राष्ट्र और भारतीय चिकित्सा उपकरण उद्योग में कैसे योगदान दे रहे हैं, का संक्षिप्त विवरण दिया।

प्रस्तुतिकरण के बाद, उन्हें संस्थान में विकसित चिकित्सा उपकरणों और उत्पादों के बारे में प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रयोगशालाओं में ले जाया गया। उन्होंने इंजीनियरिंग प्रयोगशालाओं, जीव विज्ञान प्रयोगशालाओं और सामग्री अनुसंधान प्रयोगशालाओं का दौरा किया और वैज्ञानिकों से बातचीत की। यह दौरा करीब 2 घंटे तक चला और वह शाम 4:20 बजे बीएमटी स्कंध से निकल गए। इससे संबंधित कुछ तस्वीरें नीचे दी गई हैं।

लेख

भारत में पहले हिंदी –आधारित विज्ञान और प्रौद्योगिकी संगोष्ठी का अनुभव

भारत में पहली बार आयोजित हिंदी-आधारित विज्ञान और प्रौद्योगिकी संगोष्ठी (21-22 मार्च 2024) में भाग लेना एक समृद्ध और अनूठा अनुभव था। यह ऐतिहासिक कार्यक्रम ए.आर.सी.आई. हैदराबाद में आयोजित हुआ, जिसने वैज्ञानिक चर्चा को व्यापक दर्शकों केलिए सुलभ बनाने केलिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर स्थापित किया, जो ज्ञान केप्रसार में अक्सर बाधा बनता है।

एक वक्ता के रूप में, हिंदी में व्याख्यान देना विशेष रूप से अर्थ पूर्ण था । हमारी राजभाषा का उपयोग करके जटिल वैज्ञानिक विचारों को अधिक प्रभावी ढंग से व्यक्त किया जा सकता था, जिससे दर्शकों के साथ गहरा संबंध स्थापित हो सका । उपस्थित लोगों की गर्म जोशी और उत्साह स्पष्ट थे, और सत्रों के दौरान उनकी सहभागिता ने विज्ञान को सुलभ और संबंधित बनाने में भाषा के महत्व को रेखांकित किया।

संगोष्ठी ने एक महत्वपूर्ण बिंदु को उजागर किया: शिक्षा और नवाचार में भाषा बाधा नहीं होनी चाहिए । ऐतिहासिक रूप से, भारत में अधिकांश वैज्ञानिक चर्चा अंग्रेजी में होती रही है, जिससे उन लोगों की पहुंच सीमित हो गई है जो हिंदी या अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में अधिक सहज हैं । यह कार्यक्रम एकता जगी भरा बदलाव था, जिसमें वैज्ञानिक संचार में समावेशिता कीआवश्यकता को उजागर किया गया।

यह कार्यक्रम सुव्यवस्थित था, जिसमें हमारे भाषा और विरासत की विशिष्ट सांस्कृतिक बारीकियों के साथ कठोर वैज्ञानिक चर्चा का मिश्रण था। यह प्रेरणादायक था कि प्रसिद्ध वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी विद् आसानी से हिंदी में स्विच कर रहे थे, जिससे जटिल अवधारणाएं अधिक संबंधित और समझने योग्य हो गईं। इस बदलाव ने न केवल सामग्री को अधिक सुलभ बनाया, बल्कि हमारे भाषाई विरासत में गर्व की भावना भी जगाई।

कुल मिलाकर, संगोष्ठी न केवल वैज्ञानिक उपलब्धियों का उत्सव था बल्कि एक सांस्कृतिक आंदोलन भी था, जिसका उद्देश्य ज्ञान को लोकतांत्रित करना था। इस ऐतिहासिक कार्यक्रम का हिस्सा बनना सम्मान की बात थी, और मैंने एक नए उद्देश्य की भावना और शिक्षा और आउटरीच में भाषा की भूमिका के प्रति गहरी सराहना के साथ इस कार्यक्रम को छोड़ा। इस संगोष्ठी ने निस्संदेह एक मिसाल कायम की है, भविष्य में अधिक समावेशी और सुलभ वैज्ञानिक सभाओं केलिए मार्ग प्रशस्त किया है ।

इस अनुभव ने मेरी इस विश्वास को और मजबूत किया कि भाषा समझ के अंतर को पाटने और समझ को बढ़ावा देने का एक शक्तिशाली साधन है। वैज्ञानिक चर्चा में हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को अपनाकर, हम अपार संभावनाओं के विशाल भंडार को अनलॉक कर सकते हैं और वैज्ञानिकों और नव प्रवर्तकों की एक नई पीढ़ी को प्रेरित कर सकते हैं।

डॉ नरेश के
वैज्ञानिक डी
ऊतक संवर्धन प्रभाग
बीएमटी स्कंध

कविता

मैं मर गयी ..... लेकिन अगर मैं ज़िंदा रहे तो

मैं ऐसी थी मैं वैसी थी सबसे प्यारी थी
मैं अपनी आदतों से इतनी ऊंची थी
मैं ऐसी थी मैं वैसी थी सबसे छोटी थी
मैं अपनी घर की छोटी बच्ची थी
मैं ऐसी थी मैं वैसी थी सबकी लाड़ली थी
मेरी घर की दीपक थी
मैं ऐसी थी मैं वैसी थी मैं एक परी थी
मैं तो स्वर्ग निवासी थी
मेरी मृत्यु हुई जब मैं एक अंडा थी
मुझे तो बस इतना मालूम थी कि
मैं अपनी माँ की प्यारी थी

बिनिता के ओ
सहायक लेखा अधिकारी –ए
वित्त एवं लेखा प्रभाग

रिपोर्ट

स्वच्छता पखवाड़ा अभियान 2024

स्वच्छता पखवाड़ा समारोह 2016 से मनाया जा रहा है क्योंकि स्वच्छता सभी केंद्र सरकार के मंत्रालयों और विभागों सहित “सभी का काम” है। डीएसटी के स्वच्छता समारोह के एक भाग के रूप में, एससीटीआईएमएसटी ने 01-15 मई तक स्वच्छता पखवाड़ा या स्वच्छता अभियान मनाया, जिसका विशिष्ट विषय था - "कचरा मुक्त भारत", जिसका उद्देश्य जिम्मेदार उत्पादन, उपभोग और अपशिष्ट प्रबंधन की यात्रा शुरू करने के लिए उचित ज्ञान, उपकरण और समर्थन के साथ व्यक्तियों और समुदायों को सशक्त बनाना है। डीएसटी के स्वच्छता समारोह के अनुरूप, बीएमटी परिसर में नियमित स्वच्छता संबंधी गतिविधियों के अलावा, सफाई से संबंधित कई गतिविधियां आयोजित की गईं।

बीएमटी परिसर में स्वच्छता अभियान:

जैव चिकित्सा प्रौद्योगिकी स्कंध के प्रमुख डॉ. हरिकृष्ण वर्मा पीआर के नेतृत्व में एक अत्यंत सफल परिसर सफाई अभियान आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य हमारे परिसर की स्वच्छता और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ाना तथा छात्रों और कर्मचारियों के बीच सामुदायिकता और जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देना था। इस अभियान के उद्देश्य थे: (1) परिसर में कूड़े और अपशिष्ट को एकत्र करना और उसका उचित तरीके से निपटान करना; (2) पर्यावरणीय स्थिरता और अपशिष्ट प्रबंधन के बारे में जागरूकता बढ़ाना और (3) परिसर को सुंदर बनाना और सभी के लिए स्वच्छ, स्वस्थ वातावरण बनाना। डॉ. हरिकृष्ण वर्मा पी.आर. ने इस कार्यक्रम का नेतृत्व किया तथा अपनी विशेषज्ञता और उत्साह को इस पहल में सबसे आगे रखा। स्वच्छ भारत मिशन समिति के सदस्य, छात्र और कर्मचारी योजना और कार्यान्वयन में सहायता करते हैं। परिसर सफाई अभियान की मुख्य अंश चित्र 1 में दिखाई गई हैं।

चित्र 1. परिसर सफाई अभियान की मुख्य अंश

प्रयोगशालाओं में स्वच्छता अभियान:

संदूषण को रोककर सटीक और विश्वसनीय प्रयोगात्मक परिणाम सुनिश्चित करने के लिए प्रयोगशालाओं में स्वच्छता अत्यंत महत्वपूर्ण है। नियमित सफाई और कचरे का उचित निपटान खतरनाक रासायनिक या जैविक जोखिम को कम करता है। साफ-सुथरा कार्यस्थल बनाए रखने से दुर्घटनाओं या रिसाव की संभावना कम होने से सुरक्षा भी बढ़ती है। उचित व्यवस्था और साफ-सफाई से उपकरणों और सामग्रियों तक आसान पहुंच हो जाती है, जिससे समग्र दक्षता में सुधार होता है। प्रयोगशाला वातावरण में स्वास्थ्य और सुरक्षा नियमों के अनुपालन के लिए सख्त स्वच्छता प्रोटोकॉल का पालन करना आवश्यक है। प्रयोगशाला में स्वच्छता अभियान ने सावधानीपूर्वक अपशिष्ट पृथक्करण और अनुकरणीय प्रयोगशाला रखरखाव के माध्यम से एक बेदाग स्पर्श प्रदर्शित किया। प्रयोगशाला की सफाई की झलकियां चित्र 2 में दी गई हैं।

चित्र 2. व्यवस्थित प्रयोगशालाएँ; सुव्यवस्थित विचार

स्वच्छता प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

स्वच्छ भारत अभियान (एसबीए) की परिवर्तनकारी यात्रा को रचनात्मक दृष्टिकोण से देखने के लिए बीएमटी स्कंध के कर्मचारियों और छात्रों के लिए स्वच्छता प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

स्वच्छ भारत अभियान के उद्देश्य और प्रयोजन, स्वच्छ भारत अभियान को लागू करने के लिए शुरू किए गए विभिन्न कार्यक्रम, बीएमटी स्कंध में लागू ग्रीन प्रोटोकॉल और कचरा मुक्त भारत की अवधारणा जैसे विषयों पर प्रश्न तैयार किए गए थे। श्री अनूप गोपीनाथ द्वारा प्रश्न तैयार किए गए थे, जिन्होंने स्वच्छता प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के प्रश्नोत्तरी मास्टर के रूप में भी काम किया था। कुल 14 कार्मिकों ने भाग लिया (चित्र 3)। समापन सत्र में विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए ।

स्कूल के बच्चों के लिए पोस्टर प्रतियोगिता

बच्चों के लिए पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गई (समूह 1: 5-10 वर्ष आयु; समूह 2: 10 - 18 वर्ष आयु)। "कचरा मुक्त भारत" विषय पर बच्चों के लिए आयोजित पोस्टर प्रतियोगिता में युवा कलाकारों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। बच्चों ने अपशिष्ट प्रबंधन और स्वच्छता को बढ़ावा देने वाले जीवंत और ज्ञानवर्धक पोस्टर बनाए (चित्र 4)।

चित्र 4. स्वच्छता की कल्पना करें: स्वच्छ भारत के लिए पोस्टर

प्रतियोगिता का उद्देश्य युवा पीढ़ी के बीच स्वच्छ पर्यावरण बनाए रखने के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाना था। विषय को व्यक्त करने में रचनात्मकता और प्रभावशीलता के आधार पर, सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों को समापन सत्र में पुरस्कार प्रदान किए गए। कुल मिलाकर, इस कार्यक्रम ने प्रतिभागियों और दर्शकों को कचरा मुक्त भारत की दिशा में योगदान देने के लिए सफलतापूर्वक प्रेरित किया।

"प्रयोगशाला विशिष्ट अपशिष्ट प्रबंधन के लिए नवीन रणनीति" पर विचार-मंथन सत्र

ग्रीन प्रोटोकॉल समिति के सहयोग से रासायनिक और जैविक प्रयोगशालाओं में अपशिष्ट प्रबंधन के लिए टिकाऊ प्रथाओं को अपनाने पर एक विचार-मंथन सत्र आयोजित किया गया। सत्र का नेतृत्व श्री सजित्तलाल एम के (अध्यक्ष, स्वच्छ भारत मिशन, बीएमटी स्कंध) ने किया, जिन्होंने बीएमटी परिसर में हरित प्रोटोकॉल की वर्तमान प्रथाओं पर बात की और हरित प्रोटोकॉल समिति द्वारा एकत्र आंकड़ों के माध्यम से पहचाने गए प्रयोगशाला विशिष्ट अपशिष्ट की एक समेकित रिपोर्ट प्रस्तुत की। डॉ. रेखा एम आर (रासायनिक सुरक्षा अधिकारी, बीएमटी स्कंध) और डॉ. रेम्या एन एस (जैविक सुरक्षा अधिकारी, बीएमटी स्कंध) ने संसाधन व्यक्तियों के रूप में कार्य किया और उपस्थित लोगों के साथ विभिन्न व्यावहारिक तकनीकों को साझा किया, जिन्हें पर्यावरण अनुकूल आदतों को अपनाने और स्वच्छ, स्वस्थ वातावरण में योगदान देने के लिए लागू किया जा सकता है (चित्र 5)।

चित्र 5. विचार-मंथन सत्र

विचार-मंथन सत्र का समापन सभी प्रतिभागियों की ओर से अपने दैनिक जीवन में हरित प्रोटोकॉल के सिद्धांतों को बनाए रखने की प्रतिबद्धता के साथ हुआ। कुल मिलाकर, इस कार्यक्रम ने सभी प्रतिभागियों के बीच स्वच्छ, हरित पर्यावरण बनाए रखने के लिए जिम्मेदारी और प्रतिबद्धता की भावना को सफलतापूर्वक बढ़ावा दिया।

समापन सत्र

स्वच्छता पखवाड़ा समापन सत्र की शुरुआत श्री सजित्तलाल एम के के स्वागत भाषण से हुई। श्री नागेश डी एस (वैज्ञानिक जी - वरिष्ठ ग्रेड, बीएमटी स्कंध), अध्यक्ष, ग्रीन प्रोटोकॉल समिति ने समापन सत्र की अध्यक्षता की और ग्रीन प्रोटोकॉल पर एक जानकारीपूर्ण व्याख्यान दिया।

चित्र 6. समापन सत्र एवं विजेताओं को पुरस्कार वितरण

उन्होंने टिकाऊ प्रथाओं के महत्व और उचित अपशिष्ट प्रबंधन के माध्यम से पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने पर जोर दिया। श्री नागेश ने स्वच्छता बनाए रखने और हरित जीवन शैली को बढ़ावा देने में व्यक्तिगत जिम्मेदारी की भूमिका पर भी प्रकाश डाला। स्वच्छता पखवाड़ा 2024 की रिपोर्ट डॉ. शैनी वेलायुधन ने प्रस्तुत की। डॉ. रेम्या के.आर. ने पुरस्कार विजेताओं की घोषणा की तथा श्री नागेश ने विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए। श्री अनूप गोपीनाथन ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया (चित्र 6)।

"स्वच्छ भारत के लिए एक साथ: 2024 और उसके बाद!"

स्वच्छ भारत मिशन 2024 के सदस्य (बाएं से दाएं): श्री. अनूप गोपीनाथन; श्री. सौरभ एस. नायर; डॉ. रेम्या के.आर.; डॉ. शैनी वेलायुधन; श्री. बीना पी. नायर; श्री. हेमंत कुमार आर पी; श्री. सजित्तलाल एम के और डॉ. जिजो राज

रिपोर्ट

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह

28 फरवरी 2024 को चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान,तिरुवनंतपुरम द्वारा राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2024 मनाया गया। वर्ष 2024 का विषय 'विकसित भारत के लिए स्वदेशी प्रौद्योगिकी' था। कार्यक्रम में महात्मा गांधी कॉलेज, तिरुवनंतपुरम, यूनिवर्सिटी कॉलेज, तिरुवनंतपुरम के लगभग 65 छात्रों, उपरोक्त कॉलेजों के शिक्षकों और एससीटीआईएमएसटी के संकाय और छात्रों ने भाग लिया। कार्यक्रम बीएमटी स्कंध, एससीटीआईएमएसटी त्रिवेन्द्रम के कॉम्बिनेशन डिवाइसेज (सीडी) ब्लॉक में आयोजित किया गया था।

कार्यक्रम की शुरुआत एससीटीआईएमएसटी के बीएमटी स्कंध के प्रमुख डॉ. पी.आर. हरिकृष्ण वर्मा, प्रमुख, स्वागत भाषण से हुई। एससीटीआईएमएसटी के निदेशक प्रोफेसर संजय बिहारी ने सभा को संबोधित किया और खुशी, संगीत और मस्तिष्क के विभिन्न हिस्सों के साथ उनके संबंधों के बारे में बात की। इसके बाद मुख्य अतिथि, केरल विश्वविद्यालय के कम्प्यूटेशनल जीवविज्ञान और जैव सूचना विज्ञान विभाग के प्रोफेसर और पूर्व प्रमुख प्रो. अच्युतशंकर एस. नायर ने सभा का संबोधन किया । उन्होंने 'वैज्ञानिक स्वभाव और सौंदर्य वैभव' विषय पर बात की। उन्होंने संगीत के साथ-साथ वैज्ञानिक स्वभाव में भी लय के महत्व पर जोर दिया, जिसकी परिणति अंततः मन की प्रसन्न स्थिति में होती है। उन्होंने राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह के आयोजन में हमारे संस्थान द्वारा की गए पर्यावरण-अनुकूल प्रयासों की सराहना की। इसके बाद एससीटीआईएमएसटी के कार्डियोलॉजी विभाग के प्रोफेसर डॉ. नारायणन नंबूतिरी के.के. ने 'स्वस्थ भविष्य के लिए बिल्डिंग ब्लॉक्स' विषय पर बातचीत की। छात्रों और संकाय सदस्यों की भागीदारी के साथ 'बेहतर शिक्षार्थी बनना' विषय पर समूह चर्चा आयोजित की गई, जिसका संचालन डॉ. मंजू एस. और डॉ. दीनूप के.पी., डॉ. उमाशंकर पी.आर. ने किया। सह संकायाध्यक्ष (पीएचडी मामले) ने संस्थान में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह के हिस्से के रूप में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई दी और विजेताओं की घोषणा की। डॉ. जिजोराज ने 'प्रौद्योगिकी से संबंधित विचार' श्रेणी में योग्यता प्रमाणपत्र जीता, कंप्यूटर प्रभाग के तकनीकी सहायक श्री मनोज एम. ने 'लघु निबंध' श्रेणी में योग्यता प्रमाणपत्र जीता, और डॉ. रेम्या एन.एस. 'फ़ोटोग्राफ़ी' श्रेणी में योग्यता प्रमाणपत्र जीता। डॉ. जयश्री आर.एस. ने 23 फरवरी 2024 को एससीटीआईएमएसटी ओपन डे के दौरान आयोजित 'सर्वश्रेष्ठ आइडिया प्रतियोगिता' के विजेताओं की घोषणा की गई। 333 प्रतिभागियों में से, केरल विश्वविद्यालय के जूलॉजी विभाग से सुश्री रेहाना रवींद्रन, नेशनल कॉलेज तिरुवनंतपुरम से सुश्री श्रेया राजेश और इंजीनियरिंग कॉलेज तिरुवनंतपुरम से श्री शनोज पी. को उपलब्धि का प्रमाण पत्र दिया गया।

डॉ. रॉय जोसेफ, संकायाध्यक्ष एससीटीआईएमएसटी ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया और समारोह का समापन डॉ. शैनी वेलायुधन, डॉ. रेम्या एन.एस. और श्री जोसेफ सेबेस्टियन द्वारा गाए गए राष्ट्रगान के साथ हुआ।

दोपहर के भोजन के बाद, महात्मा गांधी कॉलेज और यूनिवर्सिटी कॉलेज के छात्रों को अलग-अलग समूहों में संगठित किया गया और बीएमटी विंग परिसर में विभिन्न प्रभागों और प्रयोगशाला सुविधाओं के दौरे के लिए ले जाया गया।

National Science Day 2024

NATIONAL SCIENCE DAY
26 Feb 2024

NATIONAL SCIENCE

NATIONAL
SCIENCE
DAY
28 Feb 2024

रिपोर्ट

एससीटीआईएमएसटी में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस समारोह

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान (एससीटीआईएमएसटी), तिरुवनंतपुरम ने 7 मार्च 2024 को जैव चिकित्सा प्रौद्योगिकी स्कंध में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया। सभा का स्वागत बायोफोटोनिक्स और इमेजिंग प्रभाग की प्रमुख डॉ. जयश्री आर एस ने किया। डॉ. हरिकृष्ण वर्मा पी. आर, प्रमुख, जैव चिकित्सा प्रौद्योगिकी स्कंध, एससीटीआईएमएसटी ने उद्घाटन भाषण दिया।

इसके बाद डॉ. कविता राजा, चिकित्सा अधीक्षक, एससीटीआईएमएसटी, डॉ शैलजा पी एन, प्रोफेसर और प्रमुख, न्यूरोलॉजी प्रभाग, एससीटीआईएमएसटी, डॉ. राखल गायतोंडे, प्रोफेसर, अच्युता मेनोन स्वास्थ्य विज्ञान अध्ययन केंद्र, एससीटीआईएमएसटी और डॉ. माया नंदकुमार, प्रमुख, माइक्रोबियल टेक्नोलॉजी प्रभाग, एससीटीआईएमएसटी द्वारा महिला दिवस के संदेश दिए गए ।

सभी वक्ताओं ने समान काम के लिए समान वेतन लागू करने, नेतृत्व की भूमिकाओं में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ाने, सामाजिक कलंक को तोड़ने और सभी लिंगों के लिए अधिक न्यायसंगत और न्यायपूर्ण समाज की स्थापना के लिए सांस्कृतिक बदलाव को बढ़ावा देने के महत्व को रेखांकित किया।

इस अवसर पर, डॉ. हरिकृष्ण वर्मा पी.आर. ने एक डिजिटल पोस्टर "शास्त्र शलभंगल - 2024" का भी अनावरण किया, जिसमें बीएमटी स्कंध, एससीटीआईएमएसटी की महिला संकाय की पेंसिल से खींची गई छवियों को दर्शाया गया है। डिजिटल पोस्टर पर चित्रित महिलाओं के पेशेवर व्यक्तित्व पर डॉ. शैनी वेलायुधन द्वारा लिखित एक कविता डॉ. फ्रांसिस फर्नांडीज द्वारा सुनाई गई। डॉ. सचिन जे. शेनॉय, वैज्ञानिक जी, एससीटीआईएमएसटी ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया और राष्ट्रगान के साथ समारोह का समापन हुआ ।

Sree Chitra Tirunal Institute for Medical Sciences and Technology, Trivandrum
International Women's Day 2024
07 March 2024
Invest in Women: Accelerate Progress

Sree Chitra Tirunal Institute for Medical Sciences and Technology, Trivandrum
International Women's Day 2024
07 March 2024
Invest in Women: Accelerate Progress

Sree Chitra Tirunal Institute for Medical Sciences and Technology, Trivandrum
International Women's Day 2024
07 March 2024
Invest in Women: Accelerate Progress

Sree Chitra Tirunal Institute for Medical Sciences and Technology, Trivandrum
International Women's Day 2024
07 March 2024
Invest in Women: Accelerate Progress

UPS

Sree Chitra Tirunal Institute for Medical Sciences and Technology, Trivandrum
International Women's Day 2024
07 March 2024
Invest in Women: Accelerate Progress

SCTIMST
BIOMEDICAL TECHNOLOGY WING

लेख

रामानुजन स्मारक

कुंभकोणम तमिलनाडु के तंजावुर जिले में एक मंदिर शहर है। कुंभकोणम में ऐरावतेश्वरम सहित कई पवित्र प्राचीन मंदिर हैं जो एक विश्व धरोहर स्थल है। कुंभकोणम यात्रा का उद्देश्य राजेंद्र चोलन द्वारा निर्मित ऐरावतेश्वर मंदिर के दर्शन करना था। जब मैं वहां पहुंचा तो एक और बात मेरे दिमाग में आई। विश्व प्रसिद्ध गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन का बचपन और शिक्षा कुंभकोणम में हुई । सबसे पहले कुम्भकोणम में रामानुजन के घर जाने का निर्णय लिया गया।

रामानुजन का घर कुंभकोणम बसस्टैंड के पास सारंग पानी सन्निधि स्ट्रीट पर स्थित है । बसस्टैंड से ऑटो लिया और सीधे घर चला गया । यह पुराना घर 20 दिसंबर 2003 को एक स्मारक बन गया । इस स्मारक का उद्घाटन राष्ट्रपति ए पी जे अब्दुल कलाम ने किया था । स्मारक का रखरखाव शास्त्र डीम्ड यूनिवर्सिटी द्वारा किया जाता है ।

पहला कमरा रामानुजन के प्रमाणपत्रों और प्रसिद्ध गणितीय परिणामों की प्रतियां प्रदर्शित करता है। इनके बीच दिख रहा घर का सेल एग्रीमेंट दिलचस्प है । रामानुजन के पिता ने यह घर 210 रुपये में खरीदा था । स्मारक के अन्य आकर्षणों में रामानुजन का शयन कक्ष, रसोई घर और कुआँ शामिल हैं। यहां रामानुजन का बिस्तर और पुराने बर्तन भी देखे जा सकते हैं।

स्मितेष एस
उच्च श्रेणी लिपिक –बी
वित्त एवं लेखा प्रभाग

लेख

केरल जैव विविधता संग्रहालय

भारत अपनी समृद्ध विविधता के लिए जाना जाता है। अत्यधिक ठंड से लेकर अत्यधिक गर्मी तक तटीय क्षेत्रों से लेकर वर्षा वनों तक, उष्णकटिबंधीय जंगलों से लेकर मैंग्रोव बेल्ट तक असाधारण मौसम और जलवायु परिस्थितियों ने पौधों की 50,0000 से अधिक प्रजातियों और जानवरों की 40,000 से अधिक प्रजातियों के लिए घर और आवास बनाए है। हम बचपन से ही भारत की विविधता के बारे में सुनते आ रहे हैं, मगर इसके बारे में पूरी जानकारी बहुत कम लोगों के पास है।

केरल राज्य जैव विविधता बोर्ड ने देश का पहला जैव विविधता संग्रहालय स्थापित किया है। 5 जून 2018 को तिरुवनंतपुरम के वल्लकडवु नाव घर (boat house) में स्थापित केरल जैव विविधता संग्रहालय का उद्देश्य लोगों में जैव विविधता और प्रकृति के बारे में जागरूकता पैदा करना है। तिरुवनंतपुरम में उन्नीसवीं सदी पुराने वल्लकडवु बोटहाउस में निर्मित यह संग्रहालय देश में अपनी तरह का पहला संग्रहालय है। इसका उद्घाटन माननीय मुख्यमंत्री पिनराई विजयन के किया था। इसका निर्माण जैव विविधता के संरक्षण के लिए केरल के प्रयासों के बारे में जन जागरूकता बढ़ाने के इरादे से किया गया है।

इस संग्रहालय में जलीय पारिस्थितिकी तंत्र, वन पारिस्थितिकी तंत्र, और अन्य सहित प्रजातियों और पारिस्थितिक निर्माण की एक विस्तृत शृंखला के जीवन आकार मॉडल शामिल है। जैव विविधता के लिए खतरों की ओर भी ध्यान दिया गया है। लुप्तप्राय और स्थानिक प्रजातियों के स्केल मॉडल के साथ –साथ इंटरैक्टिव कियोस्क और एल. सी.डी को जनता के जीवन से बड़ा अनुभव देने के लिए डिजाइन किया गया है। जैव विविधता के विभिन्न पहलुओं पर सूचना पैनल, जैव विविधता पर आधारित गैलरी और विभिन्न पारिस्थितिकी तंत्र मॉडल जैव विविधता के बारे में जानने के लिए सबसे अच्छे रास्ते प्रदान करते है। इसके साथ ही, यहां एक मछलीघर और औषधीय पौधों का बगीचा भी बनाया है।

इसके अलावा संग्रहालय में पारंपरिक चावल की किस्में, विभिन्न प्रकार के सीपियाँ और अन्य समुद्री उत्पाद जैसे बहुत सारे उत्पाद है। इस संग्रहालय का लेआउट विभिन्न आश्चर्यों को सामने लाने के लिए डिजाइन किया गया है। यह संग्रहालय हमें एक ऐसी यात्रा पर ले जाता है जो बिग –बैंक सिद्धांत से क्षुरो होकर जीवन की शुरुआत पर समाप्त होती है।

संग्रहालय के लक्षित लोगों के प्रमुख समूह में किसान छात्र, वन –निर्भर समुदाय, कारीगर और शोधकर्ताओं मौजूद हैं।

यह संग्रहालय सोमवार को छोड़कर शेष सभी दिन सुबह 10.30 बजे से शाम सात बजे तक खुला रहता है। यह संग्रहालय त्रिवेंद्रम रेलवे स्टेशन से लगभग 3 किलोमीटर की दूरी पर है और इसका निकटतम हवाई अड्डा त्रिवेंद्रम अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा है जो इससे 2.5 किलोमीटर की दूरी पर है। शाम 5.30 बजे तक इसमें प्रवेश बंद हो जाएगा। संग्रहालय का प्रवेश शुल्क एक व्यक्ति के लिए केवल 40 रुपया है और अठारह से कम आयु के छात्रों के लिए केवल तीस रुपया है।

यह संग्रहालय अपने दुर्लभ और अभिन्न प्रदर्शनों के साथ अपनी तरह का अनूठा है जो जैव विविधता और हमारे पृथ्वी के बारे में हमें पूरी जानकारी देता है। यह संग्रहालय हमारे त्रिवेंद्रम जिले की महत्व पर चार चांद लगाया है। तो जितना जल्दी हो सके उतना जल्दी सभी लोग वहां पर जाइए और इस संग्रहालय के आश्चर्यों का अनुभव करें।

सुश्री कावेरी बी एस

उच्च श्रेणी लिपिक –बी

रिपोर्ट

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2024

एससीटीआईएमएसटी ने दिनांक 21.06.2024 को नाटकशाला, जैव चिकित्सा प्रौद्योगिकी स्कंध, पूजाप्पुरा, त्रिवेंद्रम में 'स्वयं और समाज के लिए योग' थीम के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया है। इस कार्यक्रम में एससीटीआईएमएसटी के कार्मिकों ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. रेखा एम आर [वैज्ञानिक 'जी'] (जैवसतह प्रौद्योगिकी प्रभाग) की प्रस्तावना के साथ हुई है। उन्होंने कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों और अतिथियों का स्वागत किया।

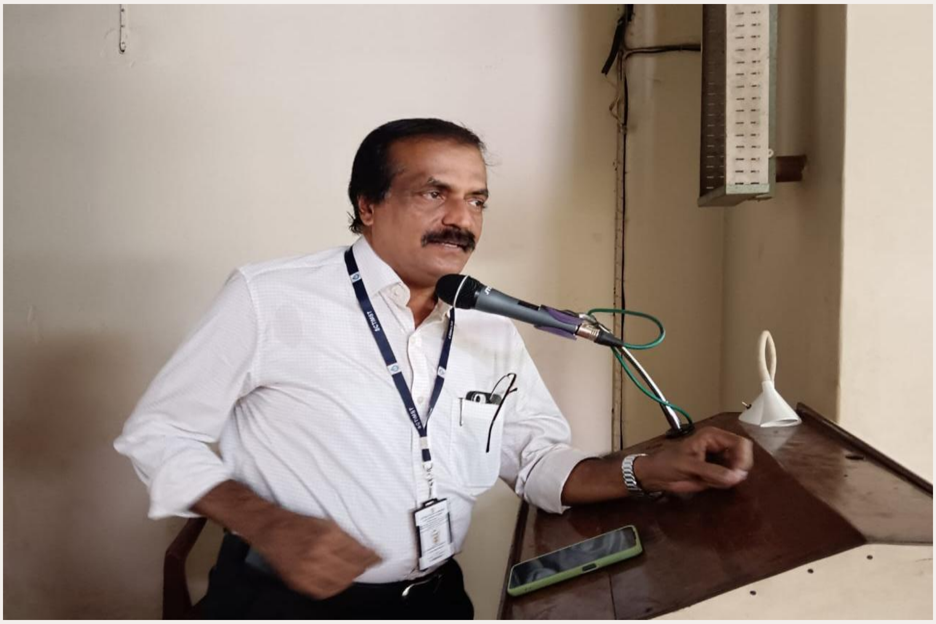

उद्घाटन भाषण डॉ. हरिकृष्ण वर्मा पी.आर., प्रमुख, बीएमटी स्कंध, एससीटीआईएमएसटी द्वारा दिया गया। उन्होंने दैनिक जीवन में योग के उद्देश्य और महत्व पर प्रकाश डाला।

बाद में ईशा फाउंडेशन के स्वयंसेवक श्री अजय बालचंद्रन द्वारा योग का परिचय और प्रदर्शन दिया गया। उन्होंने हमारे दैनिक जीवन में योग के उपयोग और महत्व के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति से योग को अपनी दिनचर्या में शामिल करने और उसका अभ्यास करने का अनुरोध किया। उन्होंने दोहराया कि योग जीवन में जबरदस्त बदलाव लाएगा। श्री अजय ने शरीर और मन दोनों के लिए योग के महत्व पर जोर दिया ।

सत्र के दौरान दो आसनों, योग नमस्कार और नाड़ी शुद्धि पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम का समापन डॉ. शैनी वेलायुधन, [वैज्ञानिक 'ई'] (दंत चिकित्सा उत्पाद प्रभाग), एससीटीआईएमएसटी के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

रिपोर्ट

एससीटीआईएमएसटी, तिरुवनंतपुरम के चिकित्सा सामाजिक कार्य प्रभाग ने 19 मार्च 2024 को विश्व सामाजिक कार्य दिवस मनाया थीम: "ब्यून विविर: परिवर्तनकारी परिवर्तन के लिए साझा भविष्य”

एससीटीआईएमएसटी, तिरुवनंतपुरम के चिकित्सा सामाजिक कार्य प्रभाग ने 19 मार्च 2024 को एससीटीआईएमएसटी परिसर में विश्व सामाजिक कार्य दिवस मनाया और 23 मार्च 2024 को श्री चित्रा होम पज़वंगाडी, तिरुवनंतपुरम में एक आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन किया। इस वर्ष का विषय "ब्यूएन विविर: परिवर्तनकारी परिवर्तन के लिए साझा भविष्य" है। यह सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए नवीन, समुदाय-आधारित दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता पर जोर देता है जो स्वदेशी ज्ञान और प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व पर आधारित हैं।

कार्यक्रम-1 : एससीटीआईएमएसटी, परिसर में संवेदीकरण सत्र; पोस्टर प्रदर्शन और लघु भाषण
दिनांक:19 मार्च 2024

संवेदीकरण सत्र का उद्देश्य मरीजों, देखभाल करने वालों और अस्पताल के कर्मचारियों के बीच विश्व सामाजिक कार्य दिवस24 का संदेश साझा करना था। संवेदीकरण कार्यक्रम सूचना केंद्रों (ब्लॉक 1 और 3) में प्रदर्शित पोस्टर और प्रत्येक ओपीडी और अस्पताल के अंदर मरीजों के प्रतीक्षा क्षेत्रों में सामाजिक कार्यकर्ताओं के एक संक्षिप्त भाषण के साथ शुरू हुआ। पोस्टर प्रस्तुति और संक्षिप्त भाषण ने जरूरतमंद मरीजों और देखभाल करने वालों को स्वास्थ्य और कल्याण के बदलते परिदृश्य, कल्याणकारी योजनाओं और ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करने में सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका के बारे में जानकारी देने में मदद की। संवेदीकरण सत्रों का नेतृत्व श्रीमती रोसम्मा मैनुएल, डॉ जिजी टी.एस., श्री कुन्निरामन ए.बी., सुश्री रेखा एम और डॉ. रेम्या एम ने किया।

कार्यक्रम-2 : श्री चित्रा होम पज़वंगाडी, तिरुवनंतपुरम में आउटरीच कार्यक्रम , दिनांक: 23 अप्रैल 2024

एससीटीआईएमएसटी, तिरुवनंतपुरम के चिकित्सा सामाजिक कार्यकर्ताओं के टीम ने श्री चित्रा होम पज़वंगाडी में संवादात्मक सत्र का आयोजन किया। श्री चित्रा होम का प्रबंधन केरल सरकार के सामाजिक न्याय विभाग द्वारा संकटग्रस्त बच्चों के लिए किया जाता है और उनके लिए दीर्घकालिक आवासीय देखभाल प्रदान की जाती है। यह जरूरतमंद और कमजोर बच्चों के समग्र विकास के लिए काम करने वाला एक संगठन है, जिसमें लगभग 135 सदस्य रहते हैं। सत्र के लिए संसाधन व्यक्ति डॉ बिंदू वी. सह आचार्या, बाल रोग एवं चिकित्सा अधीक्षक, एसएटी अस्पताल, तिरुवनंतपुरम थे।

सत्रों को दो भागों में विभाजित किया गया था, पहला सत्र पूर्व-किशोर आयु के बच्चों के लिए था और यह व्यक्तिगत स्वास्थ्य देखभाल प्रथाओं पर केंद्रित था और दूसरा सत्र आयु-उपयुक्त व्यवहार पर था और उन्हें दुर्व्यवहार से बचाने के बारे में बताकर जागरूक किया गया था, अच्छे और बुरे स्पर्शों के बारे में । संवादात्मक सत्रों की बहुत सराहना की गई और यह प्रतिक्रिया और भागीदारी में स्पष्ट था। इस बीच, दोनों समूह टीम निर्माण और पारस्परिक संचार कौशल पर व्यावहारिक अभ्यास में लगे हुए थे और इस सत्र को एससीटीआईएमएसटी के सामाजिक कार्य प्रभाग के टीम सदस्यों ने संभाला था। कार्यक्रम को एमएसडब्ल्यू और बच्चों के गीतों से समृद्ध किया गया था। डॉ.रेम्या एम. ने सत्र का संचालन किया और श्री जॉर्ज पॉल ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का समापन शाम 4:30 बजे हुआ । सामाजिक कार्य टीम 19 तारीख को एससीटीआईएमएसटी और 23 तारीख को श्री चित्राहोम के कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से शामिल थी।

टीम एमएसडब्ल्यू प्रभाग एससीटीआईएमएसटी में विश्व सामाजिक कार्य दिवस और आउटरीच कार्यक्रम मनाने की अनुमति देने के लिए निदेशक डॉ. संजय बिहारी, मार्गदर्शन और समर्थन के लिए चिकित्सा अधीक्षक डॉ. कविता राजा और एएमओ डॉ.मंजू आर. नायर को धन्यवाद देती है। हम मरीजों, दर्शकों और कर्मचारियों को उनकी भागीदारी और समर्थन के लिए धन्यवाद देते हैं।

विश्व सामाजिक कार्य दिवस – 19 मार्च 2024- एमएसडब्ल्यू प्रभाग -एससीटीआईएमएसटी, त्रिवेंद्रम -11

रिपोर्ट

हरित प्रोटोकॉल की ओर एक व्यापक कदम

ग्रीन प्रोटोकॉल रणनीति ने जहां भी संभव हो अपशिष्ट उत्पादन को खत्म करने और स्वच्छ परिसर और स्वच्छ वातावरण के लिए स्रोत पर ही कचरे को अलग करने और निपटान करने की पहल है। इसे बीएमटी स्कंध में चरणबद्ध तरीके से लागू किया गया। कार्यान्वयन का उद्घाटन 5 जून 2023 को एससीटीआईएमएसटी के निदेशक प्रोफेसर संजय बिहारी द्वारा किया गया। प्रारंभिक चरण और दूसरे चरण में बीएमटी कैंटीन और एमएसवी ब्लॉक शामिल हैं। तीसरा चरण, हरित प्रोटोकॉल का कार्यान्वयन, जिसमें पूरा बीएमटी परिसर शामिल है, 01.01.2024 को जैव चिकित्सा प्रौद्योगिकी स्कंध, पूजापुरा में एक वॉकथॉन के बाद आयोजित किया गया है। बीएमटी स्कंध के सभी कर्मचारियों और छात्रों ने कार्यक्रम में भाग लिया, अपना समर्थन व्यक्त किया और इसे एक बड़ी सफलता बनाई।

कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. जिजो राज [वैज्ञानिक सी] (पॉलीमेरिक मेडिकल डिवाइसेस प्रभाग) द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत की गई, जो डॉ. हरिकृष्ण वर्मा पी.आर. (प्रमुख, बीएमटी स्कंध) द्वारा पढ़ा गया स्वच्छ प्रतिज्ञा को छात्रों और कर्मचारियों द्वारा दोहराया गया।

डॉ. हरिकृष्ण वर्मा पी.आर. (प्रमुख, बीएमटी स्कंध) ने निर्दिष्ट किया है कि परिसर में स्वच्छता, और पानी की प्रचुरता को बनाए रखने के लिए हरित प्रोटोकॉल दिशानिर्देशों का पालन करना और कूड़ेदान का उपयोग करना अनिवार्य है। उन्होंने अपशिष्ट निपटान संदेश और अपशिष्ट प्रबंधन के विभिन्न तरीकों से परिचित होने पर जोर दिया। उन्होंने इस पहल के प्रति अपना पूर्ण समर्थन व्यक्त किया।

डॉ. नागेश डी.एस., (अध्यक्ष, ग्रीन प्रोटोकॉल समिति, बीएमटी) ने हरित प्रोटोकॉल के महत्व को प्रतिपादित किया है क्योंकि अपशिष्ट निपटान प्रबंधन के लिए 3 आर की अवधारणा, यानी कम करना, पुनर्चक्रण और पुन: उपयोग करना और शून्य अपशिष्ट के लक्ष्य को प्राप्त करना संभव है। यह हमारे व्यक्तिगत जीवन, परिवार, कार्यालय, सार्वजनिक समारोहों, सम्मेलनों, त्योहारों और जीवन के सभी क्षेत्रों में लागू होता है जहां लोग बड़ी संख्या में इकट्ठा होते हैं। उन्होंने कर्मचारियों और छात्रों को शुरुआत को अपनाने और तदनुसार कूड़ेदान का उपयोग करने का सुझाव दिया। ताकि परिसर और समाज में भी सुरक्षित और स्वच्छ अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली की एक नई संस्कृति विकसित हो सके।

श्री सजितलाल एम के [इंजीनियर-एफ, इंजीनियरिंग सेवा प्रभाग] ने हरित प्रोटोकॉल निष्पादन के उद्देश्यों और लक्ष्यों को स्पष्ट किया। उन्होंने प्लास्टिक बैग, पानी की बोतलें, एल्युमीनियम फॉयल, पेपर ग्लास/कप आदि जैसी एकल उपयोग वाली वस्तुओं की खपत को कम करने जैसे टिकाऊ विकल्पों को अपनाकर कचरे के उत्पादन को कम करने की आवश्यकता पर बल दिया और भोजन/पानी आदि परोसने के लिए कपड़े के थैले, स्टेनलेस स्टील/सिरेमिक/कांच के बर्तन जैसे पुन: प्रयोज्य विकल्पों को चुनने का सुझाव दिया। उन्होंने बीएमटी परिसर में बायो-डिग्रेडेबल कचरे के 100% घरेलू प्रबंधन के बारे में भी बताया।

श्रीमती जैस्मीन जोसेफ [वैज्ञानिक सहायक (इंस्ट्रूमेंट्स), (पॉलीमेरिक चिकित्सा उपकरणों का प्रभाग)] और श्री सुभाष कुमार एम. एस [तकनीकी सहायक (इंस्ट्रूमेंट्स)-बी, (कृत्रिम आंतरिक अंगों का प्रभाग)] ने कूड़ेदान उचित उपयोग का प्रदर्शन किया है। उन्होंने प्रत्येक प्रभाग द्वारा 6 महीने में एक बार सफाई अभियान चलाने का प्रस्ताव दिया और अपशिष्ट पदार्थों को स्रोत पर ही अलग करने और दक्षता के लिए अपशिष्ट प्रबंधन में वैज्ञानिक रणनीतियों को अपनाने के लिए अवगत कराया। उन्होंने बताया कि एकत्रित अपशिष्ट पदार्थ जैसे कागज/बोतलें/ई-कचरा को रीसाइक्लिंग के लिए अधिकृत स्क्रैप डीलर को निपटाया जाएगा। राज्य सरकार के दिशानिर्देशों के अनुसार कम मूल्य वाले प्लास्टिक और कांच के कचरे का निपटान हरिता कर्म सेना किया जाएगा। उन्होंने बताया कि प्रत्येक प्रयोगशाला के लिए आवश्यकता के अनुसार हाउस कीपिंग विभाग के माध्यम से मांग पर अतिरिक्त कूड़ेदान उपलब्ध कराए जाएंगे।

इसके बाद, वॉकथॉन पैलेस लॉन से मेडिकल प्लांट गार्डन, बायोगैस प्लांट, अपशिष्ट भंडारण सुविधा, एरोबिक कंपोस्ट पिट और भस्मित्र तक होते हुए स्मृतिवनम तक शुरू हुआ। डॉ. शैनी वेलायुधन और डॉ. रेम्या के आर ने स्वच्छ भारत मिशन समिति द्वारा स्थापित किए गए औषधीय पौधों के बगीचे के बारे में बताया।

श्री सजितलाल एम के ने बायोगैस संयंत्र और एरोबिक कंपोस्टिंग सुविधा के बारे में विस्तार से बताया। श्रीमती जैस्मिन जोसेफ ने अपशिष्ट भंडारण क्षेत्र और पृथक्करण रणनीति की रूपरेखा प्रस्तुत की। श्री बीनू सी. पी. [सहायक अभियंता (एमआरएसी)] (एयर कंडीशन मेंटेनेंस) ने भस्मक संयंत्र की वास्तविक कार्यप्रणाली का वर्णन किया है। उन्होंने उल्लेख किया कि भस्मीकरण संयंत्र प्रति घंटे 100 किलोग्राम कचरे को संभालने में सक्षम है और सूचित किया कि, इस भस्मीकरण संयंत्र का निर्माण 20 साल पहले किया गया था और बायोमेडिकल अपशिष्ट प्रबंधन नियम 2016 की नियामक आवश्यकता के अनुसार नए बायोमेडिकल उपकरणों के लिए तैयार किया गया था। उन्होंने उदाहरण सहित अपशिष्ट पदार्थों को स्रोत पर ही पृथक करने की आवश्यकता पर बल दिया।

कार्यक्रम का समापन श्रीमती जैस्मीन जोसेफ [वैज्ञानिक सहायक (इन्स्ट्रूमेंट्स)] (पॉलीमेरिक चिकित्सा उपकरण प्रभाग) द्वारा दिए गए धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

रिपोर्ट

वार्षिक दीक्षांत समारोह (40 वां बैच) & 7 वां जी पार्थसारथी व्याख्यान

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम ने 4 मई 2024 को अपने 40वें बैच के स्नातकों का वार्षिक दीक्षांत समारोह और 7वां जी.पर्यहसारथी व्याख्यान समारोह मनाया। कार्यक्रम की शुरुआत स्नातकों के शोभा यात्रा के साथ हुई। शैक्षणिक शोभा यात्रा में डॉ. वी के सारस्वत, नीति आयोग के सदस्य और संस्थान के अध्यक्ष, डॉ. अभय करंदीकर, सचिव, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, डॉ. शिव सरीन, यकृत और पित्त रोग संस्थान के निदेशक और राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष, डॉ. नारायणन, इसरो के लिक्विड प्रोपल्शन लैब के निदेशक, निदेशक, संकायाध्यक्ष, बीएमटी स्कंध के प्रमुख, सह संकायाध्यक्ष, विभागाध्यक्ष, कुलसचिव, उप कुलसचिव शामिल थे । संस्थान के अध्यक्ष डॉ. विजय कुमार सारस्वत (सदस्य, नीति आयोग, भारत सरकार) ने वरिष्ठ निवासियों और छात्रों को उपाधियाँ प्रदान कीं। दीक्षांत समारोह के दौरान 162 वरिष्ठ रेजिडेंट और छात्रों को डिग्री/डिप्लोमा प्राप्त हुआ। मुख्य अतिथि डॉ. वी. नारायणन (प्रतिष्ठित वैज्ञानिक एवं निदेशक, द्रव प्रणोदन प्रणाली केंद्र, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार) ने उत्तीर्ण स्नातकों और उनके परिवारों को बधाई दी तथा पूर्व निदेशकों के शब्दों को दोहराया।

डॉ. राजीव बहल (सचिव, भारत सरकार, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग और महानिदेशक, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद) ने ऑनलाइन माध्यम से अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की थीं। उन्होंने स्नातकों, माता पिता और एससीटीआईएमएसटी को हार्दिक शुभकामनाएं दीं। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. अभय करंदीकर (सचिव, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार) ने दीक्षांत समारोह को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि यह छात्रों और संकाय दोनों के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर है। उन्होंने बताया कि एससीटीआईएमएसटी एक अनूठा संस्थान है, जहां डॉक्टर, क्लिनिशियन, इंजीनियर, नर्सिंग पेशेवर और सार्वजनिक स्वास्थ्य पेशेवर एक साथ काम करते हैं और प्रशिक्षित होते हैं; और अलग-अलग क्षेत्रों में होने के बावजूद, एक ही दीक्षांत समारोह में अपनी डिग्री प्राप्त करते हैं। उन्होंने बताया कि एससीटीआईएमएसटी पिछले कई वर्षों से इंजीनियरिंग और चिकित्सा को मिलाकर स्वास्थ्य देखभाल में अनुसंधान कर रहा है, जो अब विभिन्न संस्थानों में किया जा रहा है। गणमान्य व्यक्तियों द्वारा विभिन्न श्रेणियों में योग्यता प्रमाणपत्र और अन्य प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। कंपनी के अधिकारियों और प्रौद्योगिकियों का अनुवाद करने वाले संकाय को मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथि द्वारा सम्मानित किया गया। संस्थान के अध्यक्ष डॉ. विजय कुमार सारस्वत (सदस्य, नीति आयोग, भारत सरकार) द्वारा आवास प्रबंधन प्रणाली और नई संस्थान आचार समिति ऑनलाइन पोर्टल का शुभारंभ किया गया ।

पार्थसारथी व्याख्यान डॉ शिव कुमार सरीन (अध्यक्ष, राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी, निदेशक, यकृत और पित्त रोग संस्थान) द्वारा दिया गया। उन्होंने फैटी लीवर पर एक शानदार भाषण दिया और बताया कि कैसे हृदय और तंत्रिका संबंधी रोग इसके साथ जुड़े हुए हैं। उन्होंने स्नातकों को बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। मंच पर उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों ने उनका अभिनंदन किया। कार्यक्रम का समापन डॉ रॉय जोसेफ (संकायाध्यक्ष) द्वारा प्रस्तावित धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम – 695 011, केरल, भारत
SREE CHITRA TIRUNAL INSTITUTE FOR MEDICAL SCIENCES AND TECHNOLOGY TRIVANDRUM – 695 011, KERALA, INDIA
Parthasarathi Oration - 2024
Dr. Vijay Kumar Saraswat
Hon'ble Chief Guest Dr. Abhay Karandikar
(Secretary, Dept. of Science and Technology, Govt. of India)
Hon'ble Guest of Honour Dr. V. Narayanan
G. Parthasarathi Orator Dr. Shiv Kumar Sarin
तारीख / DATE: 4TH MAY 2024 09.30 A.M.
स्थान: अच्युता मेनोन स्वास्थ्य विज्ञान अध्ययन केंद्र सभागार VENUE: ACHUTHA MENON CENTRE FOR HEALTH SCIENCE STUDIES AUDITORIUM

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम – 695 011, केरल, भारत
SREE CHITRA TIRUNAL INSTITUTE FOR MEDICAL SCIENCES AND TECHNOLOGY TRIVANDRUM – 695 011, KERALA, INDIA
40 वां बैच वार्षिक दीक्षांत समारोह & 7 वां जी. पार्थसारथी व्याख्यान - 2024
40th Batch Annual Convocation & 7th G. Parthasarathi Oration - 2024
Conferment of Degrees Dr. Vijay Kumar Saraswat
Hon'ble Chief Guest Dr. Abhay Karandikar
(Secretary, Dept. of Science and Technology, Govt. of India)
Hon'ble Guest of Honour Dr. V. Narayanan
G. Parthasarathi Orator Dr. Shiv Kumar Sarin
तारीख / DATE: 4TH MAY 2024 09.30 A.M.
स्थान: अच्युता मेनोन स्वास्थ्य विज्ञान अध्ययन केंद्र सभागार VENUE: ACHUTHA MENON CENTRE FOR HEALTH SCIENCE STUDIES AUDITORIUM

40 वां बैच वार्षिक दीक्षांत समारोह
40th Batch Annual Convocation
Conferment of Degrees Dr. Vijay Kumar Saraswat
Hon'ble Guest of Honour Dr. V. Narayanan
तारीख /DATE:

रिपोर्ट

नर्सिंग सेवा प्रभाग
राज्य स्तरीय सम्मेलन
"महाधमनी सर्जरी के प्रवेश द्वार को खोलना: नर्सिंग उत्कृष्टता को सशक्त बनाना"

8 जून 2024 को सुबह 8 बजे से शाम 5 बजे तक एएमसीएचएसएस सभागार में "महाधमनी सर्जरी के प्रवेश द्वार खोलना: नर्सिंग उत्कृष्टता को सशक्त बनाना" विषय पर एक दिवसीय सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसका आयोजन नर्सिंग सेवा प्रभाग और कार्डियोवैस्कुलर और थोरेसिक सर्जरी विभाग, श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन सीवीटीएस के पूर्व प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष तथा एससीटीआईएमएसटी के पूर्व निदेशक डॉ. जयकुमार के ने दीप प्रज्वलित करके तथा उपस्थित लोगों को संबोधित करके किया।

बैठक की अध्यक्षता नर्सिंग अधीक्षक श्रीमती निर्मला एम ओ, डॉ विवेक वी पिल्लई, विभागाध्यक्ष, सीवीटीएस, डॉ उन्नीकृष्णन एम; पूर्व प्रोफेसर एससीटीआईएमएसटी और विभागाध्यक्ष, सीवीटीएस, एसयूटी अस्पताल, पट्टम और डॉ श्रीनिवास वी जी, विभागाध्यक्ष, एनेस्थिसियोलॉजी ने की।

उप नर्सिंग अधीक्षक श्रीमती लीना आर के ने स्वागत किया तथा वरिष्ठ नर्सिंग अधिकारी श्रीमती अनिला रानी वी एस ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

सम्मेलन के मुख्य भाग में विविध प्रकार के अध्यक्षों, वक्ताओं और पैनलिस्टों के साथ कई सत्र शामिल थे। सम्मेलन के पूरे विषय को 3 सत्रों में विभाजित किया गया था: (सत्र 1: महाधमनी विच्छेदन, सत्र 2: आरोही महाधमनी धमनीविस्फार, सत्र 3: महाधमनी का आर्क, थोरैसिक और उदर महाधमनी धमनीविस्फार)। प्रत्येक सत्र नर्सिंग केस स्टडी प्रस्तुतियों से समृद्ध था।

सम्मेलन का समापन डॉ. रंजीत एस द्वारा आयोजित एक प्रश्नोत्तरी के साथ हुआ, जिसने कार्यक्रम के समग्र प्रभाव को बढ़ाया। मुख्य भाषणों और पैनल चर्चाओं के अतिरिक्त, सम्मेलन में कई व्यावहारिक इंटरैक्टिव स्टॉल और महाधमनी की शारीरिक रचना का 3 डी प्रक्षेपण भी शामिल था।

राज्य स्तरीय नर्सिंग सम्मेलन "महाधमनी सर्जरी के प्रवेश द्वार खोलना: नर्सिंग उत्कृष्टता को सशक्त बनाना" एक शानदार सफलता थी, जिसने ज्ञान प्रसार, पेशेवर विकास और सहयोगी नेटवर्किंग के अपने लक्ष्यों को प्राप्त किया। विविध प्रकार के सत्रों ने उपस्थित लोगों को महाधमनी सर्जरी के वर्तमान परिदृश्य और भविष्य की दिशा की व्यापक समझ प्रदान की। इस कार्यक्रम में बहुविषयक देखभाल टीम में नर्सों की अपरिहार्य भूमिका को रेखांकित किया गया तथा रोगी परिणामों और समग्र स्वास्थ्य देखभाल गुणवत्ता में उनके योगदान पर प्रकाश डाला गया।

आयोजकों, अध्यक्षों, वक्ताओं, पैनलिस्टों और प्रतिभागियों के सामूहिक प्रयासों से यह सुनिश्चित हुआ कि यह कार्यक्रम जानकारीपूर्ण और प्रभावशाली दोनों था, तथा इसमें भाग लेने वाले सभी लोगों पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ा है ।

राजभाषा की गतिविधियां

एससीटीआईएमएसटी के हिन्दी प्रकोष्ठ संस्थान में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग एवं सफल कार्यान्वयन के लिए कार्यरत है। अधिकारियों एवं कर्मचारियों के राजभाषा हिन्दी के प्रति रुचि एवं प्रयोग को बढ़ाने के लिए प्रकोष्ठ द्वारा समय –समय पर विभिन्न कार्यशालाओं को आयोजित किया जाता है। राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा प्रत्येक तिमाही में बैठक का आयोजन किया जाता है और राजभाषा के प्रगति पर चर्चा की जाती है। हर वर्ष हिन्दी प्रकोष्ठ द्वारा हिन्दी गृह पत्रिका ''चित्रलेखा'' के दो खंड प्रकाशित किए जाते हैं।

हिन्दी प्रकोष्ठ द्वारा संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए प्रत्येक तिमाही में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है , जिससे राजभाषा के प्रयाग करते समय कर्मचारियों द्वारा सामने करने वाले परेशानियों को दूर किया जा सके तथा अधिक से अधिक हिन्दी का प्रयोग किया जा सके। जनवरी 2024 से जून 2024 तक की अवधि के दौरान हिन्दी प्रकोष्ठ द्वारा दिनांक 05.03.2024 को संस्थान के बीएमटी स्कंध के क्रय एवं भंडार अनुभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए ''सरकारी पत्राचार तथा टिप्पण और प्रारूपण'' विषय पर हिन्दी कार्यशाला आयोजित किया गया। दिनांक 17.05.2024 को एससीटीआईएमएसटी के चिकित्सा अधीक्षक कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए ''टिप्पण और आलेखन'' विषय पर हिन्दी कार्यशाला आयोजित किया गया।

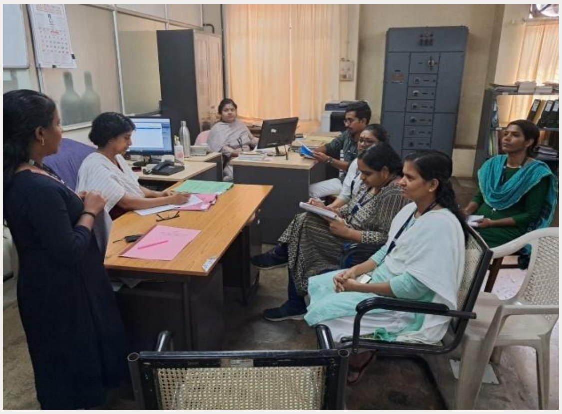
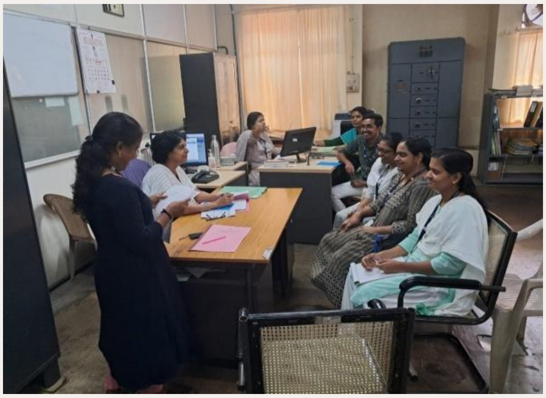

पुरस्कार एवं सम्मान

इंटरनेशनल एडवांस्ड रिसर्च सेंटर फॉर पाउडर मेटलर्जी एंड न्यू मैटेरियल्स (एआरसीआई), हैदराबाद, डीएसटी का एक स्वायत्त संस्थान ने 21-22 मार्च 2024 को प्रथम अखिल भारतीय वैज्ञानिक और तकनीकी राजभाषा संगोष्ठी 2024 आयोजित किया गया। एससीटीआईएमएसटी को "डीएसटी उत्कृष्ट कार्यान्वयन प्रोत्साहन योजना" के तहत प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

❖ राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय I), तिरुवनंतपुरम से नराकास राजभाषा पुरस्कार 2022-23 के अंतर्गत एससीटीआईएमएसटी को उत्कृष्ट राजभाषा कार्य निष्पादन के लिए **विशेष उल्लेख पुरस्कार** तथा एससीटीआईएमएसटी की हिन्दी गृह पत्रिका **'चित्रलेखा'** को **तृतीय पुरस्कार** प्राप्त हुआ है ।

मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

मुहावरे

❖अंग –अंग टूटना – सारा शरीर दर्द करना

❖अपना उल्लू सीधा करना – अपना मतलब निकालना

❖अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना – अपनी प्रशंसा स्वयं करना

❖आंखों में धूल झोंकना – धोखा देना

❖आंख मारना – इशारा करना

❖आंखों का तारा – बहुत प्यारा

❖उल्टी गंगा बहना – विपरीत काम करना

❖ओखली में सिर देना – जान बूझकर झंझट में फंसना

❖काना भरना – चुगली करना

❖कलेजा फटना – बहुत दुख देना

लोकोक्तियाँ

❖अंत बुरे का बुरा – बुरे का अंत बुरा होता है

❖अंधा क्या चाहे दो आंखें – आवश्यक वस्तु जब अचानक ही मिल जाए तब यह कहा जाता है

❖अंधों में काना राजा – मूर्खों में तनिक ज्ञान वाला भी आदर पाता है

❖अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता – कठिन काम एक व्यक्ति से नहीं हो सकता

❖अक्ल बड़ी या भैंस – शारीरिक शक्ति से मानसिक शक्ति अधिक प्रबल होती है

❖अंधेर नगरी चौपट राजा टेक सेर भाजी टेक सेर खाजा – जहां मालिक मूर्ख हो वहाँ गुण की कीमत नहीं होती

❖अंधे के हाथ बटेर लगना – किसी अयोग्य व्यक्ति के हाथ भाग्य –वश अच्छी वस्तु लग जाने पर कहा जाता है